قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَاِذَا سَمِعُوْا

पारा - 7

eParah

الجزء ٧

وَإِذَا	سَمِعُوْا	مَآ	أُنْزِلَ	إِلَى الرَّسُوْلِ	تَرٰٓى	أَعْيُنَهُمْ	تَفِيْضُ
और जब	वो सुनते हैं	जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ रसूल के	आप देखते हैं	उनकी आँखों को	बह पड़ती हैं

مِنَ الدَّمْعِ	مِمَّا	عَرَفُوْا	مِنَ الْحَقِّ ج	يَقُوْلُوْنَ	رَبَّنَآ
आँसुओं से	इस (वजह) से जो	उन्होंने पहचान लिया	हक़ को	वो कहते हैं	ऐ हमारे रब

اٰمَنَّا	فَاكْتُبْنَا	مَعَ	الشّٰهِدِيْنَ (83)	وَمَا	لَنَا	لَا نُؤْمِنُ	بِاللّٰهِ
ईमान लाए हम	पस लिख दे हमें	साथ	शहादत देने वालों के	और क्या है	हमें	कि ना हम ईमान लाएं	अल्लाह पर

وَمَا	جَآءَنَا	مِنَ الْحَقِّ لا	وَنَطْمَعُ	أَنْ	يُّدْخِلَنَا	رَبُّنَا	مَعَ
और (उस पर) जो	आया हमारे पास	हक़ में से	और हम उम्मीद रखते हैं	कि	दाख़िल करेगा हमें	रब हमारा	साथ

الْقَوْمِ	الصّٰلِحِيْنَ (84)	فَأَثَابَهُمُ	اللّٰهُ	بِمَا	قَالُوْا	جَنّٰتٍ
उन लोगों के	जो सालेह हैं	पस बदले में दिया उन्हें	अल्लाह ने	बवजह उसके जो	उन्होंने कहा	बाग़ात को

تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْأَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ط	وَذٰلِكَ	جَزَآءُ
बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और ये	बदला है

الْمُحْسِنِيْنَ (85)	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَكَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَآ	أُولٰٓئِكَ	أَصْحٰبُ
एहसान करने वालों का	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने झुठलाया	हमारी आयात को	यही लोग हैं	साथी

ع 11 9 1

الْجَحِيْمِ (86) ع	يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تُحَرِّمُوْا	طَيِّبٰتِ	مَآ	أَحَلَّ
जहन्नम के	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम हराम करो	पाकीज़ा चीज़ें	जो	हलाल कीं

اللّٰهُ	لَكُمْ	وَلَا	تَعْتَدُوْا ط	إِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ	الْمُعْتَدِيْنَ (87)
अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	और ना	तुम हद से तजावुज़ करो	बेशक	अल्लाह	नहीं वो पसंद करता	हद से तजावुज़ करने वालों को

وَكُلُوْا	مِمَّا	رَزَقَكُمُ	اللّٰهُ	حَلٰلًا	طَيِّبًا ص	وَّاتَّقُوا	اللّٰهَ	الَّذِيْٓ
और खाओ	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया तुम्हें	अल्लाह ने	हलाल	पाकीज़ा	और डरो	अल्लाह से	वो जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّنْتَهُوْنَ ﴿91﴾	وَ اَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَ اَطِيْعُوا	الرَّسُوْلَ	وَ احْذَرُوْا ج	فَاِنْ
बाज़ आने वाले हो	और इताअत करो	अल्लाह की	और इताअत करो	रसूल की	और डरो	फिर अगर

تَوَلَّيْتُمْ	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّمَا	عَلٰى رَسُوْلِنَا	الْبَلٰغُ	الْمُبِيْنُ ﴿92﴾	لَيْسَ
मुँह मोड़ लिया तुमने	तो जान लो	बेशक	हमारे रसूल के ज़िम्मे	पहुँचा देना है	खुल्लम-खुल्ला	नहीं है

عَلَى الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَ عَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	جُنَاحٌ	فِيْمَا	طَعِمُوْٓا	اِذَا مَا
ऊपर उनके जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	कोई गुनाह	उसमें जो	उन्होंने खाया	जब

اتَّقَوْا	وَّ اٰمَنُوْا	وَ عَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	ثُمَّ	اتَّقَوْا	وَّ اٰمَنُوْا	ثُمَّ
उन्होंने तक़वा किया	और वो ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	फिर	उन्होंने तक़वा किया	और वो ईमान लाए	फिर

ع 12 7 2

اتَّقَوْا	وَّ اَحْسَنُوْا ط	وَاللّٰهُ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿93﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
उन्होंने तक़वा किया	और उन्होंने नेक काम किए	और अल्लाह	वो पसंद करता है	नेक काम करने वालों को	ऐ लोगो जो

اٰمَنُوْا	لَيَبْلُوَنَّكُمُ	اللّٰهُ	بِشَيْءٍ	مِّنَ الصَّيْدِ	تَنَالُهٗٓ	اَيْدِيْكُمْ
ईमान लाए हो	अलबत्ता ज़रूर आज़माएगा तुम्हें	अल्लाह	साथ एक चीज़ के	शिकार में से	पा लेंगे उसे	हाथ तुम्हारे

وَ رِمَاحُكُمْ	لِيَعْلَمَ	اللّٰهُ	مَنْ	يَّخَافُهٗ	بِالْغَيْبِ	فَمَنِ	اعْتَدٰى
और नेज़े तुम्हारे	ताकि जान ले	अल्लाह	कौन	डरता है उससे	ग़ायबाना तौर पर	तो जो कोई	ज़्यादती करे

بَعْدَ ذٰلِكَ	فَلَهٗ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿94﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَقْتُلُوا
बाद उसके	तो उसके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम मारो

الصَّيْدَ	وَ اَنْتُمْ	حُرُمٌ	وَمَنْ	قَتَلَهٗ	مِنْكُمْ	مُّتَعَمِّدًا	فَجَزَآءٌ
शिकार को	जब कि तुम	एहराम में हो	और जिसने	मारा उसे	तुम में से	जान-बूझ कर	तो बदला है

مِّثْلُ	مَا	قَتَلَ	مِنَ النَّعَمِ	يَحْكُمُ	بِهٖ	ذَوَا عَدْلٍ	مِّنْكُمْ	هَدْيًا
मानिन्द	उसके जो	उसने मारा	चौपायों में से	फ़ैसला करेंगे	उसका	दो अदल वाले	तुम में से	बतौर क़ुर्बानी के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْتُمْ	بِهٖ	مُؤْمِنُوْنَ ﴿88﴾	لَا يُؤَاخِذُكُمُ	اللّٰهُ	بِاللَّغْوِ	فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ
तुम	जिस पर	ईमान रखते हो	नहीं मुआख़ज़ा करता तुम्हारा	अल्लाह	लग़्व पर	तुम्हारी क़समों में

وَلٰكِنْ	يُّؤَاخِذُكُمْ	بِمَا	عَقَّدْتُّمُ	الْاَيْمَانَ ۚ	فَكَفَّارَتُهٗٓ	اِطْعَامُ
और लेकिन	वो मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	उन पर जो	मज़बूत बाँधी तुमने	क़समें	तो कफ़्फ़ारा है उसका	खाना खिलाना

عَشَرَةِ	مَسٰكِيْنَ	مِنْ اَوْسَطِ	مَا	تُطْعِمُوْنَ	اَهْلِيْكُمْ	اَوْ
दस	मिस्कीनों को	औसत दर्जे का	जो	तुम खिलाते हो	अपने घरवालों को	या

كِسْوَتُهُمْ	اَوْ	تَحْرِيْرُ	رَقَبَةٍ ؕ	فَمَنْ	لَّمْ	يَجِدْ	فَصِيَامُ
कपड़े पहनाना उन्हें	या	आज़ाद करना	एक गर्दन का	पस जो कोई	ना	पाए	तो रोज़े रखना हैं

ثَلٰثَةِ	اَيَّامٍ ؕ	ذٰلِكَ	كَفَّارَةُ	اَيْمَانِكُمْ	اِذَا	حَلَفْتُمْ ؕ	وَاحْفَظُوْٓا
तीन	दिनों के	ये	कफ़्फ़ारा है	तुम्हारी क़समों का	जब	क़सम खाओ तुम	और हिफ़ाज़त किया करो

اَيْمَانَكُمْ ؕ	كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمْ	اٰيٰتِهٖ	لَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿89﴾
अपनी क़समों की	इसी तरह	वाज़े करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपनी आयात को	ताकि तुम	तुम शुक्र करो

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنَّمَا	الْخَمْرُ	وَالْمَيْسِرُ	وَالْاَنْصَابُ	وَالْاَزْلَامُ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	बेशक	शराब (नशा)	और जुआ	और बुत	और फ़ाल के तीर

رِجْسٌ	مِّنْ عَمَلِ	الشَّيْطٰنِ	فَاجْتَنِبُوْهُ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿90﴾	اِنَّمَا
नापाक हैं	अमल से हैं	शैतान के	पस बचो उससे	ताकि तुम	तुम फ़लाह पाओ	बेशक

يُرِيْدُ	الشَّيْطٰنُ	اَنْ	يُّوْقِعَ	بَيْنَكُمُ	الْعَدَاوَةَ	وَالْبَغْضَآءَ	فِي الْخَمْرِ
चाहता है	शैतान	कि	वो डाल दे	दर्मियान तुम्हारे	अदावत	और बुग़्ज़	बवजह शराब (नशे)

وَالْمَيْسِرِ	وَيَصُدَّكُمْ	عَنْ ذِكْرِ	اللّٰهِ	وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ	فَهَلْ	اَنْتُمْ
और जुए के	और रोक दे तुम्हें	ज़िक्र से	अल्लाह के	और नमाज़ से	तो क्या	तुम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَلِغَ	الْكَعْبَةِ	اَوْ	كَفَّارَةٌ	طَعَامُ	مَسٰكِيْنَ	اَوْ	عَدْلُ	ذٰلِكَ
पहुँचने वाली	काबा तक	या	कफ़्फ़ारा है	खाना खिलाना	चंद मिस्कीनों का	या	बराबर	उसके

صِيَامًا	لِّيَذُوْقَ	وَبَالَ	اَمْرِهٖ ؕ	عَفَا	اللّٰهُ	عَمَّا	سَلَفَ ؕ	وَمَنْ
रोज़े रखना है	ताकि वो चखें	वबाल	अपने काम का	दरगुज़र किया	अल्लाह ने	उससे जो	गुज़र चुका	और जो कोई

عَادَ	فَيَنْتَقِمُ	اللّٰهُ	مِنْهُ ؕ	وَاللّٰهُ	عَزِيْزٌ	ذُو انْتِقَامٍ ﴿95﴾	اُحِلَّ
लौटा	तो इन्तिक़ाम लेगा	अल्लाह	उससे	और अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	इन्तिक़ाम लेने वाला है	हलाल किया गया है

لَكُمْ	صَيْدُ	الْبَحْرِ	وَطَعَامُهٗ	مَتَاعًا	لَّكُمْ	وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ
तुम्हारे लिए	शिकार	समुन्दर का	और खाना उसका	फायदामन्द है	तुम्हारे लिए	और क़ाफ़िले के लिए

وَحُرِّمَ	عَلَيْكُمْ	صَيْدُ	الْبَرِّ	مَا دُمْتُمْ	حُرُمًا ؕ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ
और हराम किया गया	तुम पर	शिकार	ख़ुश्की का	जब तक हो तुम	एहराम में	और डरो	अल्लाह से

الَّذِيْٓ	اِلَيْهِ	تُحْشَرُوْنَ ﴿96﴾	جَعَلَ	اللّٰهُ	الْكَعْبَةَ	الْبَيْتَ	الْحَرَامَ
वो जो	तरफ़ उसी के	तुम इकट्ठे किए जाओगे	बनाया	अल्लाह ने	काबा को	घर	हुरमत वाला

قِيٰمًا	لِّلنَّاسِ	وَالشَّهْرَ	الْحَرَامَ	وَالْهَدْيَ	وَالْقَلَآئِدَ ؕ	ذٰلِكَ
क़याम का ज़रिया	लोगों के लिए	और माहे	हराम को	और क़ुर्बानी को	और पट्टे वाले जानवरों को	ये (इसलिए)

لِتَعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ
ताकि तुम जान लो	बेशक	अल्लाह	वो जानता है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है

وَاَنَّ	اللّٰهَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ ﴿97﴾	اِعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	شَدِيْدُ
और बेशक	अल्लाह	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	जान लो	बेशक	अल्लाह	सख़्त

الْعِقَابِ	وَاَنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿98﴾ ؕ	مَا	عَلَى الرَّسُوْلِ
सज़ा वाला है	और बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	नहीं है	रसूल पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَكْتُمُوْنَ ﴿99﴾	وَمَا	تُبْدُوْنَ	مَا	يَعْلَمُ	وَاللّٰهُ	الْبَلٰغُ ؕ	اِلَّا
तुम छुपाते हो	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो	जो	जानता है	और अल्लाह	पहुँचा देना	मगर

الْخَبِيْثِ ۚ	كَثْرَةُ	اَعْجَبَكَ	وَلَوْ	وَالطَّيِّبُ	الْخَبِيْثُ	لَّا يَسْتَوِى	قُلْ
नापाक की	कसरत	अच्छी लगे तुम्हें	और अगरचे	और पाक	नापाक	नहीं बराबर हो सकते	कह दीजिए

ع 13 7 3

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	تُفْلِحُوْنَ ع ﴿100﴾	لَعَلَّكُمْ	يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ	اللّٰهَ	فَاتَّقُوا
ऐ लोगो जो	तुम फ़लाह पा जाओ	ताकि तुम	ऐ अक़्ल वालो	अल्लाह से	पस डरो

تَسُؤْكُمْ ۚ	لَكُمْ	تُبْدَ	اِنْ	عَنْ اَشْيَآءَ	لَا تَسْـَٔلُوْا	اٰمَنُوْا
बुरी लगें तुम्हें	तुम्हारे लिए	वो ज़ाहिर कर दी जाऐं	अगर	ऐसी चीज़ों के बारे में	ना तुम सवाल करो	ईमान लाए हो

لَكُمْ ؕ	تُبْدَ	الْقُرْاٰنُ	يُنَزَّلُ	حِيْنَ	عَنْهَا	تَسْـَٔلُوْا	وَاِنْ
तुम्हारे लिए	वो ज़ाहिर कर दी जाऐंगी	क़ुरआन	नाज़िल किया जाता है	जिस वक़्त	उनके बारे में	तुम सवाल करोगे	और अगर

سَاَلَهَا	قَدْ	حَلِيْمٌ ﴿101﴾	غَفُوْرٌ	وَاللّٰهُ	عَنْهَا ؕ	اللّٰهُ	عَفَا
सवाल किया था उनके बारे में	तहक़ीक़	बहुत बुर्दबार है	बहुत बख़्शने वाला है	और अल्लाह	उनसे	अल्लाह ने	दरगुज़र किया

جَعَلَ	مَا	كٰفِرِيْنَ ﴿102﴾	بِهَا	اَصْبَحُوْا	ثُمَّ	مِّنْ قَبْلِكُمْ	قَوْمٌ
बनाया	नहीं	इन्कार करने वाले	उनका	वो हो गए	फिर	तुम से पहले	एक क़ौम ने

وَّلٰكِنَّ	وَّلَا حَامٍ ۙ	وَصِيْلَةٍ	وَّلَا	سَآئِبَةٍ	وَّلَا	مِنْۢ بَحِيْرَةٍ	اللّٰهُ
और लेकिन	और ना कोई हाम	कोई वसीला	और ना	कोई साएबा	और ना	कोई बहीरह	अल्लाह ने

لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿103﴾	وَاَكْثَرُهُمْ	الْكَذِبَ ؕ	عَلَى اللّٰهِ	يَفْتَرُوْنَ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ
नहीं वो अक़्ल रखते	और अक्सर उनके	झूठ	अल्लाह पर	वो गढ़ लेते हैं	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने

اللّٰهُ	اَنْزَلَ	مَاۤ	اِلٰى	تَعَالَوْا	لَهُمْ	قِيْلَ	وَاِذَا
अल्लाह ने	नाज़िल किया	उसके जो	तरफ़	आओ	उन्हें	कहा जाता है	और जब

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰبَآءَنَا ؕ	عَلَيْهِ	وَجَدْنَا	مَا	حَسْبُنَا	قَالُوْا	وَاِلَى الرَّسُوْلِ
अपने आबा ओ अजदाद को	उस पर	पाया हमने	जो	काफ़ी है हमें	वो कहते हैं	और तरफ़ रसूल के

يَهْتَدُوْنَ (104)	وَّلَا	شَيْـًٔا	لَا يَعْلَمُوْنَ	اٰبَآؤُهُمْ	كَانَ	اَوَلَوْ
वो हिदायत याफ़्ता हों	और ना	कुछ भी	ना वो इल्म रखते	आबा ओ अजदाद उनके	हों	क्या भला अगरचे

ضَلَّ	مَّنْ	لَا يَضُرُّكُمْ	اَنْفُسَكُمْ ج	عَلَيْكُمْ	اٰمَنُوْا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
भटक गया	जो	ना नुक़सान देगा तुम्हें	अपनी जानों को	लाज़िम है तुम पर (बचाना)	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

كُنْتُمْ	بِمَا	فَيُنَبِّئُكُمْ	جَمِيْعًا	مَرْجِعُكُمْ	اِلَى اللّٰهِ	اهْتَدَيْتُمْ ؕ	اِذَا
थे तुम	वो जो	फिर वो बता देगा तुम्हें	सबका	लौटना है तुम्हारा	तरफ़ अल्लाह ही के	हिदायत पा चुके तुम	जब

حَضَرَ	اِذَا	بَيْنِكُمْ	شَهَادَةُ	اٰمَنُوْا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	تَعْمَلُوْنَ (105)
हाज़िर हो	जब	तुम्हारे दर्मियान	गवाही हो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	तुम अमल करते

اَوْ	مِّنْكُمْ	ذَوَا عَدْلٍ	اثْنٰنِ	الْوَصِيَّةِ	حِيْنَ	الْمَوْتُ	اَحَدَكُمُ
या	तुम में से	अदल वालों की	दो	वसीयत के	वक़्त	मौत	तुम में से किसी एक को

فَاَصَابَتْكُمْ	فِى الْاَرْضِ	ضَرَبْتُمْ	اَنْتُمْ	اِنْ	مِنْ غَيْرِكُمْ	اٰخَرٰنِ
फिर पहुँचे तुम्हें	ज़मीन में	सफ़र कर रहे हो तुम	तुम	अगर	तुम्हारे अलावा से	दो और

فَيُقْسِمٰنِ	الصَّلٰوةِ	مِنْۢ بَعْدِ	تَحْبِسُوْنَهُمَا	الْمَوْتِ ؕ	مُّصِيْبَةُ
फिर वो दोनों क़समें खाएँ	नमाज़ के	बाद	तुम रोक लो उन दोनों को	मौत की	मुसीबत

كَانَ	وَّلَوْ	ثَمَنًا	بِهٖ	لَا نَشْتَرِىْ	ارْتَبْتُمْ	اِنِ	بِاللّٰهِ
हो वो	और अगरचे	कोई क़ीमत	साथ उसके	कि ना हम लेंगे	शक करो तुम	अगर	अल्लाह की

لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ (106)	اِذًا	اِنَّاۤ	اللّٰهِ	شَهَادَةَ ۙ	نَكْتُمُ	وَلَا	ذَا قُرْبٰى ۙ
अलबत्ता गुनाहगारों में से होंगे	तब	बेशक हम	अल्लाह की	गवाही को	हम छुपाएँगे	और ना	रिश्तेदार

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَقُوْمٰنِ	فَاٰخَرٰنِ	اِثْمًا	اسْتَحَقَّآ	اَنَّهُمَا	عَلٰٓى	عُثِرَ	فَاِنْ
वो दोनों खड़े होंगे	पस दो दूसरे	गुनाह के	वो मुस्तहिक़ हुए हैं	कि बेशक वो दोनों	उस पर	इत्तिला हो जाए	फिर अगर

فَيُقْسِمٰنِ	الْاَوْلَيٰنِ	عَلَيْهِمُ	اسْتَحَقَّ	مِنَ الَّذِيْنَ	مَقَامَهُمَا
फिर वो दोनों क़समें खाएंगे	दो क़रीब-तरीन	जिन पर	हक़ साबित हो गया	उन लोगों में से	उन दोनों की जगह

اِنَّآ	اعْتَدَيْنَآ ۖ	وَمَا	مِنْ شَهَادَتِهِمَا	اَحَقُّ	لَشَهَادَتُنَآ	بِاللّٰهِ
बेशक हम	ज़्यादती की हमने	और नहीं	उन दोनों की गवाही से	ज़्यादा सच्ची है	अलबत्ता गवाही हमारी	अल्लाह की

بِالشَّهَادَةِ	يَّاْتُوْا	اَنْ	اَدْنٰٓى	ذٰلِكَ	لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (107)	اِذًا
गवाही को	वो लाएं	कि	ज़्यादा क़रीब है	ये	अलबत्ता ज़ालिमों में से होंगे	तब

اَيْمَانِهِمْ ؕ	بَعْدَ	اَيْمَانٌۢ	تُرَدَّ	اَنْ	يَّخَافُوْٓا	اَوْ	عَلٰى وَجْهِهَآ
उन (विरसा) की क़समों के	बाद	(उनकी) क़समें	रद्द कर दी जाएंगी	कि	वो डरें	या	उसके (असल) रुख़ पर

14 ع 8 4

الْفٰسِقِيْنَ (108) ع	الْقَوْمَ	لَا يَهْدِي	وَاللّٰهُ	وَاسْمَعُوْا ؕ	اللّٰهَ	وَاتَّقُوا
जो फासिक़ हैं	उन लोगों को	नहीं वो हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो	अल्लाह से	और डरो

قَالُوْا	اُجِبْتُمْ ؕ	مَاذَآ	فَيَقُوْلُ	الرُّسُلَ	اللّٰهُ	يَجْمَعُ	يَوْمَ
वो कहेंगे	जवाब दिए गए थे तुम	क्या	फिर वो कहेगा	रसूलों को	अल्लाह	जमा करेगा	जिस दिन

اللّٰهُ	قَالَ	اِذْ	الْغُيُوْبِ (109)	عَلَّامُ	اَنْتَ	اِنَّكَ	لَنَا ؕ	لَا عِلْمَ
अल्लाह	फरमाएगा	जब	ग़ैबों का	ख़ूब जानने वाला	तू ही है	बेशक तू	हमें	नहीं कोई इल्म

وقف لازم

اِذْ	وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ	عَلَيْكَ	نِعْمَتِيْ	اذْكُرْ	يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
जब	और तेरी वालिदा पर	तुझ पर है	मेरी नेअमत (जो)	याद करो	ऐ ईसा इब्ने मरियम

وَكَهْلًا ۚ	فِي الْمَهْدِ	النَّاسَ	تُكَلِّمُ	بِرُوْحِ الْقُدُسِ قف	اَيَّدْتُّكَ
और अधेड़ उम्र में	गहवारे में	लोगों से	तू कलाम करता था	साथ रुहुल क़ुदुस के	ताईद की मैंने तेरी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاِذْ	عَلَّمْتُكَ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ	وَالتَّوْرٰىةَ	وَالْاِنْجِيْلَ ۚ	وَاِذْ
और जब	तालीम दी मैंने तुझे	किताब	और हिकमत की	और तौरात	और इंजील की	और जब

تَخْلُقُ	مِنَ الطِّيْنِ	كَهَيْـَٔةِ	الطَّيْرِ	بِاِذْنِيْ	فَتَنْفُخُ	فِيْهَا
तू बनाता था	मिट्टी से	मानिन्द शक्ल	परिन्दे की	मेरे इज़्न से	फिर तू फूँक मारता था	उस में

فَتَكُوْنُ	طَيْرًا	بِاِذْنِيْ	وَتُبْرِئُ	الْاَكْمَهَ	وَالْاَبْرَصَ	بِاِذْنِيْ ۚ
फिर वो हो जाता था	परिन्दा	मेरे इज़्न से	और तू अच्छा कर देता था	पैदाइशी अंधे को	और बर्स वाले को	मेरे इज़्न से

وَاِذْ	تُخْرِجُ	الْمَوْتٰى	بِاِذْنِيْ ۚ	وَاِذْ	كَفَفْتُ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
और जब	तू निकालता था	मुर्दों को	मेरे इज़्न से	और जब	रोका मैंने	बनी इस्राईल को

عَنْكَ	اِذْ	جِئْتَهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ	فَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْهُمْ
तुझसे	जब	लाया तू उनके पास	वाज़ेह निशानियाँ	तो कहा	उन्होंने जिन्होंने	कुफ़्र किया	उनमें से

اِنْ	هٰذَآ	اِلَّا	سِحْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿110﴾	وَاِذْ	اَوْحَيْتُ	اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ
नहीं है	ये	मगर	जादू	खुल्लम-खुल्ला	और जब	वही की मैंने	तरफ़ हवारियों के

اَنْ	اٰمِنُوْا	بِيْ	وَبِرَسُوْلِيْ ۚ	قَالُوْٓا	اٰمَنَّا	وَاشْهَدْ	بِاَنَّنَا
ये कि	ईमान लाओ	मुझ पर	और मेरे रसूल पर	उन्होंने कहा	ईमान लाए हम	और गवाह रह	बेशक हम

مُسْلِمُوْنَ ﴿111﴾	اِذْ	قَالَ	الْحَوَارِيُّوْنَ	يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ	هَلْ
मुसलमान हैं	जब	कहा	हवारियों ने	ऐ ईसा इब्ने मरियम	क्या

يَسْتَطِيْعُ	رَبُّكَ	اَنْ	يُّنَزِّلَ	عَلَيْنَا	مَآئِدَةً	مِّنَ السَّمَآءِ ؕ	قَالَ
इस्तिताअत रखता है	रब तेरा	कि	वो उतारे	हम पर	एक दस्तरख़ान	आसमान से	उसने कहा

اتَّقُوا	اللّٰهَ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿112﴾	قَالُوْا	نُرِيْدُ	اَنْ
डरो	अल्लाह से	अगर	हो तुम	मोमिन	उन्होंने कहा	हम चाहते हैं	कि

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صَدَقْتَنَا	قَدْ	اَنْ	وَنَعْلَمَ	قُلُوْبُنَا	وَتَطْمَئِنَّ	مِنْهَا	نَّاْكُلَ
सच कहा तूने हमसे	तहक़ीक़	कि	और हम जान लें	दिल हमारे	और मुत्मइन हो जाएं	उससे	हम खाएं

اللّٰهُمَّ	عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ	قَالَ	مِنَ الشّٰهِدِيْنَ (113)	عَلَيْهَا	وَنَكُوْنَ
ऐ अल्लाह	ईसा इब्ने मरियम ने	कहा	गवाहों में से	उस पर	और हम हो जाएं

عِيْدًا	لَنَا	تَكُوْنُ	مِّنَ السَّمَآءِ	مَآئِدَةً	عَلَيْنَا	اَنْزِلْ	رَبَّنَآ
ईद	हमारे लिए	वो हो जाए	आसमान से	एक दस्तरख़ान	हम पर	उतार	ऐ हमारे रब

وَاَنْتَ	وَارْزُقْنَا	مِّنْكَ ج	وَاٰيَةً	وَاٰخِرِنَا	لِّاَوَّلِنَا
और तू	और रिज़्क़ दे हमें	तेरी तरफ़ से	और एक निशानी	और हमारे पिछलों के	वास्ते हमारे पहलों के

عَلَيْكُمْ ج	مُنَزِّلُهَا	اِنِّىْ	اللّٰهُ	قَالَ	الرّٰزِقِيْنَ (114)	خَيْرُ
तुम पर	नाज़िल करने वाला हूँ उसे	बेशक मैं	अल्लाह ने	फ़रमाया	सब रिज़्क़ देने वालों से	बेहतर है

عَذَابًا	اُعَذِّبُهٗ	فَاِنِّىْٓ	مِنْكُمْ	بَعْدُ	يَّكْفُرْ	فَمَنْ
ऐसा अज़ाब	मैं अज़ाब दूँगा उसे	तो बेशक मैं	तुम में से	बाद उसके	कुफ़्र करेगा	तो जो कोई

ع 15 7 5

اللّٰهُ	قَالَ	وَاِذْ	مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ (115) ع	اَحَدًا	لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ
अल्लाह	फरमाएगा	और जब	तमाम जहान वालों में से	किसी एक को	नहीं मैं अज़ाब दूँगा वो

وَاُمِّىَ	اتَّخِذُوْنِىْ	لِلنَّاسِ	قُلْتَ	ءَاَنْتَ	يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
और मेरी माँ को	बना लो मुझे	लोगों से	कहा था तूने	क्या तूने	ऐ ईसा इब्ने मरियम

اَنْ	لِىْٓ	يَكُوْنُ	مَا	سُبْحٰنَكَ	قَالَ	اللّٰهِ ط	مِنْ دُوْنِ	اِلٰهَيْنِ
कि	मेरे लिए	है	नहीं	पाक है तू	वो कहेंगे	अल्लाह के	सिवाय	दो इलाह

فَقَدْ	قُلْتُهٗ	كُنْتُ	اِنْ	بِحَقٍّ ط	لِىْ ق	لَيْسَ	مَا	اَقُوْلَ
तो तहक़ीक़	कहता मैं उसको	था मैं	अगर	कोई हक़	मुझे	नहीं	जिसका	मैं कहूँ (वो बात)

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلِمْتَهٗ ؕ	تَعْلَمُ	مَا	فِیْ نَفْسِیْ	وَلَآ	اَعْلَمُ	مَا	فِیْ نَفْسِكَ ؕ
तू जान लेता उसे	तू जानता है	जो	मेरे नफ़्स में है	और नहीं	मैं जानता	जो	तेरे नफ़्स में है

اِنَّكَ	اَنْتَ	عَلَّامُ	الْغُیُوْبِ ﴿116﴾	مَا	قُلْتُ	لَهُمْ	اِلَّا	مَآ
बेशक तू	तू ही है	ख़ूब जानने वाला	ग़ैबों का	नहीं	कहा था मैंने	उन्हें	मगर	जो

اَمَرْتَنِیْ	بِهٖٓ	اَنِ	اعْبُدُوا	اللّٰهَ	رَبِّیْ	وَرَبَّكُمْ ۚ	وَكُنْتُ
हुक्म दिया तूने मुझे	जिसका	कि	इबादत करो	अल्लाह की	जो रब है मेरा	और रब है तुम्हारा	और था मैं

عَلَیْهِمْ	شَهِیْدًا	مَّا دُمْتُ	فِیْهِمْ ۚ	فَلَمَّا	تَوَفَّیْتَنِیْ	كُنْتَ
उन पर	गवाह	जब तक मैं रहा	उनमें	फिर जब	फौत कर दिया तूने मुझे	था तू

اَنْتَ	الرَّقِیْبَ	عَلَیْهِمْ ؕ	وَاَنْتَ	عَلٰی	كُلِّ	شَیْءٍ	شَهِیْدٌ ﴿117﴾	اِنْ
तू ही	निगरान	उन पर	और तू	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब गवाह है	अगर

تُعَذِّبْهُمْ	فَاِنَّهُمْ	عِبَادُكَ ۚ	وَاِنْ	تَغْفِرْ	لَهُمْ	فَاِنَّكَ	اَنْتَ
तू अज़ाब दे उन्हें	तो बेशक वो	बन्दे हैं तेरे	और अगर	तू बख़्श दे	उन्हें	तो बेशक तू	तू ही है

الْعَزِیْزُ	الْحَكِیْمُ ﴿118﴾	قَالَ	اللّٰهُ	هٰذَا	یَوْمُ	یَنْفَعُ	الصّٰدِقِیْنَ
बहुत ज़बरदस्त	बहुत हिकमत वाला	फ़रमाएगा	अल्लाह	ये	दिन है	नफ़ा देगा	सच्चों को

صِدْقُهُمْ ؕ	لَهُمْ	جَنّٰتٌ	تَجْرِیْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِیْنَ
सच उनका	उन के लिए	बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं

فِیْهَآ	اَبَدًا ؕ	رَضِیَ	اللّٰهُ	عَنْهُمْ	وَرَضُوْا	عَنْهُ ؕ	ذٰلِكَ
उनमें	अबद तक/हमेशा	राज़ी हो गया	अल्लाह	उनसे	और वो राज़ी हो गए	उससे	यही है

الْفَوْزُ	الْعَظِیْمُ ﴿119﴾	لِلّٰهِ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا
कामयाबी	बहुत बड़ी	अल्लाह ही के लिए है	बादशाहत	आसमानों की	और ज़मीन की	और जो कुछ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

16 ع 5 6

قَدِيْرٌ ﴿120﴾ ع	شَیْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	وَهُوَ	فِيْهِنَّ ؕ
बहुत क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर	और वो	उनमें है

رُكُوْعَاتُهَا: 20 — 6 سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ 55 — اٰيَاتُهَا: 165

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الظُّلُمٰتِ	وَجَعَلَ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	الَّذِىْ	لِلّٰهِ	اَلْحَمْدُ
अँधेरों	और उसने बनाया	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	वो जिसने	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़

الَّذِىْ	هُوَ	يَعْدِلُوْنَ ﴿1﴾	بِرَبِّهِمْ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	ثُمَّ	وَالنُّوْرَ ؕ
जिसने	वो ही है	वो बराबर क़रार देते हैं	साथ अपने रब के	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	फिर	और रोशनी को

عِنْدَهٗ	مُّسَمًّى	وَاَجَلٌ	اَجَلًا ؕ	قَضٰٓى	ثُمَّ	مِّنْ طِيْنٍ	خَلَقَكُمْ
उसके यहाँ	मुक़र्रर है	और एक (और) मुद्दत	एक मुद्दत	उसने मुक़र्रर की	फिर	मिट्टी से	पैदा किया तुम्हें

وَفِى الْاَرْضِ ؕ	فِى السَّمٰوٰتِ	اللّٰهُ	وَهُوَ	تَمْتَرُوْنَ ﴿2﴾	اَنْتُمْ	ثُمَّ
और ज़मीन में	आसमानों में	अल्लाह	और वो है	तुम शक करते हो	तुम	फिर (भी)

تَاْتِيْهِمْ	وَمَا	تَكْسِبُوْنَ ﴿3﴾	مَا	وَيَعْلَمُ	وَجَهْرَكُمْ	سِرَّكُمْ	يَعْلَمُ
आती उनके पास	और नहीं	तुम कमाते हो	जो	और वो जानता है	और ज़ाहिर तुम्हारा	पोशीदा तुम्हारा	वो जानता है

فَقَدْ	مُعْرِضِيْنَ ﴿4﴾	عَنْهَا	كَانُوْا	اِلَّا	رَبِّهِمْ	مِّنْ اٰيٰتِ	مِّنْ اٰيَةٍ
पस तहक़ीक़	ऐराज़ करने वाले	उससे	हैं वो	मगर	उनके रब की	निशानियों में से	कोई निशानी

مَا	اَنْۢبٰٓؤُا	يَاْتِيْهِمْ	فَسَوْفَ	جَآءَهُمْ ؕ	لَمَّا	بِالْحَقِّ	كَذَّبُوْا
उसकी जो	ख़बरें	आएंगी उनके पास	पस अनक़रीब	वो आया उनके पास	जब	हक़ को	उन्होंने झुठलाया

اَهْلَكْنَا	كَمْ	يَرَوْا	اَلَمْ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿5﴾	بِهٖ	كَانُوْا
हलाक कर दीं हमने	कितनी ही	उन्होंने देखा	क्या नहीं	वो मज़ाक़ उड़ाते	जिसका	थे वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نُمَكِّنْ	لَمْ	مَا	فِي الْاَرْضِ	مَّكَّنّٰهُمْ	مِّنْ قَرْنٍ	مِنْ قَبْلِهِمْ
हमने क़ुदरत दी	नहीं	वो जो	ज़मीन में	क़ुदरत दी थी हमने उन्हें	क़ौमें	उनसे पहले

تَجْرِيْ	الْاَنْهٰرَ	وَّ جَعَلْنَا	مِّدْرَارًا ۠	عَلَيْهِمْ	السَّمَآءَ	وَ اَرْسَلْنَا	لَّكُمْ
जो बहती थीं	नहरें	और बनाईं हमने	बहुत बरसने वाला	उन पर	आसमान को	और भेजा हमने	तुम्हें

مِنْ بَعْدِهِمْ	وَ اَنْشَاْنَا	بِذُنُوْبِهِمْ	فَاَهْلَكْنٰهُمْ	مِنْ تَحْتِهِمْ
बाद उनके	और उठाईं हमने	बवजह उनके गुनाहों के	पस हलाक कर दिया हमने उन्हें	उनके नीचे से

فِيْ قِرْطَاسٍ	كِتٰبًا	عَلَيْكَ	نَزَّلْنَا	وَ لَوْ	اٰخَرِيْنَ ⑥	قَرْنًا
काग़ज में	एक किताब	आप पर	नाज़िल करते हम	और अगर	दूसरी	क़ौमें

اِلَّآ	هٰذَآ	اِنْ	كَفَرُوْٓا	الَّذِيْنَ	لَقَالَ	بِاَيْدِيْهِمْ	فَلَمَسُوْهُ
मगर	ये	नहीं है	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	अलबत्ता कहते	अपने हाथों से	फिर वो छू लेते उसे

وَ لَوْ	مَلَكٌ ؕ	عَلَيْهِ	اُنْزِلَ	لَوْ لَآ	وَقَالُوْا	مُّبِيْنٌ ⑦	سِحْرٌ
और अगर	कोई फ़रिश्ता	उस पर	उतारा गया	क्यों नहीं	और उन्होंने कहा	खुल्लम-खुल्ला/वाज़ेह	जादू

جَعَلْنٰهُ	وَ لَوْ	لَا يُنْظَرُوْنَ ⑧	ثُمَّ	الْاَمْرُ	لَّقُضِيَ	مَلَكًا	اَنْزَلْنَا
बनाते हम उसे	और अगर	ना वो मोहलत दिए जाते	फिर	मामले का	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	कोई फ़रिश्ता	उतारते हम

يَلْبِسُوْنَ ⑨	مَّا	عَلَيْهِمْ	وَّ لَلَبَسْنَا	رَجُلًا	لَّجَعَلْنٰهُ	مَلَكًا
वो शुबह करते हैं	जो	उन पर	और अलबत्ता मुशतबा कर देते हम	आदमी ही	अलबत्ता बनाते हम उसे	एक फ़रिश्ता

سَخِرُوْا	بِالَّذِيْنَ	فَحَاقَ	مِّنْ قَبْلِكَ	بِرُسُلٍ	اسْتُهْزِئَ	وَ لَقَدِ
तमसख़ुर किया	उनको जिन्होंने	तो घेर लिया	आपसे पहले	कई रसूलों का	मज़ाक़ उड़ाया गया	और अलबत्ता तहक़ीक़

فِي الْاَرْضِ	سِيْرُوْا	قُلْ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ⑩ ع	بِهٖ	كَانُوْا	مَّا	مِنْهُمْ
ज़मीन में	चलो फिरो	कह दीजिए	वो मज़ाक़ उड़ाते	जिसका	थे वो	उसने जो	उनमें से

ع 1 10 7

لِّمَنْ	قُلْ	الْمُكَذِّبِيْنَ (11)	عَاقِبَةُ	كَانَ	كَيْفَ	انْظُرُوْا	ثُمَّ
किसके लिए है	कह दीजिए	झुठलाने वालों का	अंजाम	हुआ	किस तरह	देखो	फिर

عَلٰى نَفْسِهِ	كَتَبَ	لِلّٰهِ ؕ	قُلْ	وَالْاَرْضِ ؕ	فِى السَّمٰوٰتِ	مَّا
अपने नफ़्स पर	उसने लिख दी	अल्लाह ही के लिए है	कह दीजिए	और ज़मीन में है	आसमानों में	जो कुछ

فِيْهِ ؕ	لَا رَيْبَ	الْقِيٰمَةِ	اِلٰى يَوْمِ	لَيَجْمَعَنَّكُمْ	الرَّحْمَةَ ؕ
उसमें	नहीं कोई शक	क़यामत के	तरफ़ दिन	अलबत्ता वो ज़रूर जमा करेगा तुम्हें	रहमत

مَا	وَلَهٗ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (12)	فَهُمْ	اَنْفُسَهُمْ	خَسِرُوْٓا	اَلَّذِيْنَ
जो	और उसी के लिए है	नहीं वो ईमान लाएंगे	पस वो	अपने नफ़्सों को	नुक़सान में डाला	वो जिन्होंने

قُلْ	الْعَلِيْمُ (13)	السَّمِيْعُ	وَهُوَ	وَالنَّهَارِ ؕ	فِى الَّيْلِ	سَكَنَ
कह दीजिए	ख़ूब जानने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है	और वो	और दिन में	रात में	साकिन है (ठहरा हुआ)

وَهُوَ	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	فَاطِرِ	وَلِيًّا	اَتَّخِذُ	اللّٰهِ	اَغَيْرَ
और वो	और ज़मीन का	आसमानों	पैदा करने वाला है	कोई दोस्त	मैं बना लू	अल्लाह के	क्या सिवाय

اَكُوْنَ	اَنْ	اُمِرْتُ	اِنِّيْٓ	قُلْ	يُطْعَمُ ؕ	وَلَا	يُطْعِمُ
मैं हो जाऊँ	कि	हुक्म दिया गया हूँ मैं	बेशक मैं	कह दीजिए	वो खिलाया जाता	और नहीं	वो खिलाता है

قُلْ	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (14)	تَكُوْنَنَّ	وَلَا	اَسْلَمَ	مَنْ	اَوَّلَ
कह दीजिए	मुशरिकीन में से	हरगिज़ आप हों	और ना	इस्लाम लाया	जो	सबसे पहला

يَوْمٍ عَظِيْمٍ (15)	عَذَابَ	رَبِّيْ	عَصَيْتُ	اِنْ	اَخَافُ	اِنِّيْٓ
बड़े दिन के	अज़ाब से	अपने रब की	नाफ़रमानी की मैं ने	अगर	मैं डरता हूँ	बेशक मैं

الْفَوْزُ	وَذٰلِكَ	رَحِمَهٗ ؕ	فَقَدْ	يَوْمَئِذٍ	عَنْهُ	يُّصْرَفْ	مَنْ
कामयाबी	और यही है	उसने रहम किया उस पर	तो तहक़ीक़	उस दिन	उससे (अज़ाब)	फेर दिया गया	जो कोई

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهٗٓ	كَاشِفَ	فَلَا	بِضُرٍّ	اللّٰهُ	يَّمْسَسْكَ	وَاِنْ	الْمُبِيْنُ (16)
उसे	कोई दूर करने वाला	तो नहीं	कोई नुक़सान	अल्लाह	पहुँचाए आपको	और अगर	खुली / वाज़ेह

شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	فَهُوَ	بِخَيْرٍ	يَّمْسَسْكَ	وَاِنْ	هُوَ ط	اِلَّا
चीज़ के	हर	ऊपर	तो वो	कोई भलाई	वो पहुँचाए आपको	और अगर	वो ही	मगर

الْحَكِيْمُ	وَهُوَ	عِبَادِهٖ ط	فَوْقَ	الْقَاهِرُ	وَهُوَ	قَدِيْرٌ (17)
बहुत हिकमत वाला है	और वो	अपने बन्दों के	ऊपर	ग़लबा रखने वाला है	और वो	खूब क़ुदरत रखने वाला है

اللّٰهُ قف	قُلِ	شَهَادَةً ط	اَكْبَرُ	شَيْءٍ	اَيُّ	قُلْ	الْخَبِيْرُ (18)
अल्लाह	कह दीजिए	गवाही में	सब से बड़ी	चीज़ है	कौन सी	कह दीजिए	ख़ूब बाख़बर है

لِاُنْذِرَكُمْ	الْقُرْاٰنُ	هٰذَا	اِلَيَّ	وَاُوْحِيَ	وَبَيْنَكُمْ قف	بَيْنِيْ	شَهِيْدٌۢ
ताकि मैं डराऊँ तुम्हें	क़ुरआन	ये	मेरी तरफ़	और वही किया गया	और दर्मियान तुम्हारे	दर्मियान मेरे	गवाह है

اللّٰهِ	مَعَ	اَنَّ	لَتَشْهَدُوْنَ	اَئِنَّكُمْ	بَلَغَ ط	وَمَنْۢ	بِهٖ
अल्लाह के	साथ	बेशक	अलबत्ता तुम गवाही देते हो	क्या बेशक तुम	ये पहुँचे	और जिसे	साथ इसके

اِلٰهٌ	هُوَ	اِنَّمَا	قُلْ	لَّآ اَشْهَدُ ج	قُلْ	اُخْرٰى ط	اٰلِهَةً
इलाह है	वो	बेशक	कह दीजिए	नहीं मैं गवाही देता	कह दीजिए	दूसरे	इलाह हैं

اٰتَيْنٰهُمُ	الَّذِيْنَ	تُشْرِكُوْنَ (19) م	مِّمَّا	بَرِيْٓءٌ	وَّاِنَّنِيْ	وَّاحِدٌ
दी हमने उन्हें	वो लोग जो	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बरी-उज़-ज़िम्मा हूँ	और बेशक मैं	एक ही

وقف لازم باتفاق

خَسِرُوْٓا	الَّذِيْنَ	اَبْنَآءَهُمْ م	يَعْرِفُوْنَ	كَمَا	يَعْرِفُوْنَهٗ	الْكِتٰبَ
ख़सारे में डाला	वो जिन्होंने	अपने बेटों को	वो पहचानते हैं	जैसा कि	वो पहचानते हैं उसे	किताब

وقف لازم

افْتَرٰى	مِمَّنِ	اَظْلَمُ	وَمَنْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (20) ع	فَهُمْ	اَنْفُسَهُمْ
गढ़ ले	उससे जो	बड़ा ज़ालिम है	और कौन	नहीं वो ईमान लाते	तो वो	अपने नफ़्सों को

ع 2 10 8

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا	اَوْ	كَذَّبَ	بِاٰيٰتِهٖ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يُفْلِحُ
अल्लाह पर	झूठ	या	झुठलाए	उसकी आयात को	बेशक वो	नहीं वो फ़लाह पाऐंगे

الظّٰلِمُوْنَ ﴿21﴾	وَيَوْمَ	نَحْشُرُهُمْ	جَمِيْعًا	ثُمَّ	نَقُوْلُ	لِلَّذِيْنَ
जो ज़ालिम हैं	और जिस दिन	हम इकट्ठा करेंगे उनको	सब के सब को	फिर	हम कहेंगे	उनसे जिन्होंने

اَشْرَكُوْٓا	اَيْنَ	شُرَكَآؤُكُمُ	الَّذِيْنَ	كُنْتُمْ	تَزْعُمُوْنَ ﴿22﴾	ثُمَّ
शिर्क किया	कहाँ हैं	शरीक तुम्हारे	वो जो	थे तुम	तुम दावा करते	फिर

لَمْ	تَكُنْ	فِتْنَتُهُمْ	اِلَّآ	اَنْ	قَالُوْا	وَ	اللّٰهِ	رَبِّنَا	مَا
नहीं	होगा	उज़र उनका	मगर	ये कि	वो कहेंगे	क़सम है	अल्लाह की	जो रब है हमारा	ना

كُنَّا	مُشْرِكِيْنَ ﴿23﴾	اُنْظُرْ	كَيْفَ	كَذَبُوْا	عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ	وَضَلَّ
थे हम	शिर्क करने वाले	देखिए	किस तरह	उन्होंने झूठ बोला	अपने नफ़्सों पर	और गुम हो गए

عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ ﴿24﴾	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّسْتَمِعُ	اِلَيْكَ ۚ
उनसे	जो	थे वो	वो गढ़ते	और उनमें से कोई है	जो	कान लगाता है	तरफ़ आपके

وَجَعَلْنَا	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	اَكِنَّةً	اَنْ	يَّفْقَهُوْهُ	وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ	وَقْرًا ؕ
और डाल दिए हमने	उनके दिलों पर	परदे	कि	(ना) वो समझ सकें उसे	और उनके कानों में	बोझ है

وَاِنْ	يَّرَوْا	كُلَّ	اٰيَةٍ	لَّا يُؤْمِنُوْا	بِهَا ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءُوْكَ
और अगर	वो देख लें	हर	निशानी	ना वो ईमान लाऐंगे	उस पर	यहाँ तक कि	जब	वो आते हैं आपके पास

يُجَادِلُوْنَكَ	يَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّآ	اَسَاطِيْرُ
वो झगड़ा करते हैं आपसे	कहते हैं	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं	ये	मगर	कहानियाँ

الْاَوَّلِيْنَ ﴿25﴾	وَهُمْ	يَنْهَوْنَ	عَنْهُ	وَيَنْـَٔوْنَ	عَنْهُ	وَاِنْ	يُّهْلِكُوْنَ
पहलों की	और वो	वो रोकते हैं	उससे	और वो दूर रहते हैं	उससे	और नहीं	वो हलाक करते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّآ	اَنْفُسَهُمْ	وَمَا	يَشْعُرُوْنَ ﴿26﴾	وَلَوْ	تَرٰٓى	اِذْ	وُقِفُوْا
मगर	अपने नफ़्सों को	और नहीं	वो शऊर रखते	और काश	आप देखें	जब	वो खड़े किए जाऐंगे

عَلَى النَّارِ	فَقَالُوْا	يٰلَيْتَنَا	نُرَدُّ	وَلَا	نُكَذِّبَ	بِاٰيٰتِ	رَبِّنَا
ऊपर आग के	तो वो कहेंगे	ऐ काश हम	हम लौटाए जाऐं	और ना	हम झुठलाऐं	आयात को	अपने रब की

وَنَكُوْنَ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿27﴾	بَلْ	بَدَا	لَهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يُخْفُوْنَ
और हम हों	मोमिनों में से	बल्कि	ज़ाहिर हो गया	उनके लिए	जो	थे वो	वो छुपाते

مِنْ قَبْلُ ط	وَلَوْ	رُدُّوْا	لَعَادُوْا	لِمَا	نُهُوْا	عَنْهُ	وَاِنَّهُمْ
इससे क़ब्ल	और अगर	वो लौटाए जाऐं	अलबत्ता फिर करेंगे	उसी को जो	वो रोके गए थे	जिससे	और बेशक वो

لَكٰذِبُوْنَ ﴿28﴾	وَقَالُوْٓا	اِنْ	هِيَ	اِلَّا	حَيَاتُنَا	الدُّنْيَا	وَمَا
अलबत्ता झूठे हैं	और उन्होंने कहा	नहीं	ये	मगर	ज़िन्दगी हमारी	दुनिया की	और नहीं

نَحْنُ	بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿29﴾	وَلَوْ	تَرٰٓى	اِذْ	وُقِفُوْا	عَلٰى رَبِّهِمْ ط
हम	उठाए जाने वाले	और काश	आप देखें	जब	वो खड़े किए जाऐंगे	अपने रब के सामने

قَالَ	اَلَيْسَ	هٰذَا	بِالْحَقِّ ط	قَالُوْا	بَلٰى	وَ	رَبِّنَا ط	قَالَ
वो फ़रमाएगा	क्या नहीं है	ये	हक़	वो कहेंगे	क्यों नहीं	क़सम है	हमारे रब की	वो फ़रमाएगा

ع 3 10 9

فَذُوْقُوا	الْعَذَابَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ ﴿30﴾ ع	قَدْ	خَسِرَ
पस चखो	अज़ाब	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	तहक़ीक़	ख़सारे में रहे

الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِلِقَآءِ	اللّٰهِ ط	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءَتْهُمُ	السَّاعَةُ
वो जिन्होंने	झुठलाया	मुलाक़ात को	अल्लाह की	यहाँ तक कि	जब	आ जाएगी उनके पास	घड़ी (क़यामत की)

بَغْتَةً	قَالُوْا	يٰحَسْرَتَنَا	عَلٰى	مَا	فَرَّطْنَا	فِيْهَا لا	وَهُمْ
अचानक	वो कहेंगे	हाय अफ़्सोस हमारा	उस पर	जो	कमी-कोताही की हमने	उस के बारे में	और वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَحْمِلُوْنَ	اَوْزَارَهُمْ	عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ	اَلَا	سَآءَ	مَا	يَزِرُوْنَ ﴿31﴾
वो उठाऐंगे	बोझ अपने	अपनी पुश्तों पर	ख़बरदार	कितना बुरा है	जो	बोझ वो उठाऐंगे

وَمَا	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَآ	اِلَّا	لَعِبٌ	وَّلَهْوٌ ؕ	وَلَلدَّارُ	الْاٰخِرَةُ
और नहीं	ज़िन्दगी	दुनिया की	मगर	खेल	और तमाशा	और अलबत्ता घर	आख़िरत का

خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿32﴾	قَدْ	نَعْلَمُ	اِنَّهٗ
बेहतर है	उनके लिए जो	तक़वा करते हैं	क्या भला नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते	तहक़ीक़	हम जानते हैं	कि बेशक वो

لَيَحْزُنُكَ	الَّذِيْ	يَقُوْلُوْنَ	فَاِنَّهُمْ	لَا يُكَذِّبُوْنَكَ	وَلٰكِنَّ
अलबत्ता ग़मगीन करता है आपको	जो	वो कहते हैं	पस बेशक वो	नहीं वो झुठलाते आपको	और लेकिन

الظّٰلِمِيْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	يَجْحَدُوْنَ ﴿33﴾	وَلَقَدْ	كُذِّبَتْ	رُسُلٌ
ज़ालिम	अल्लाह की आयात का ही	वो इन्कार करते हैं	और अलबत्ता तहक़ीक़	झुठलाए गए	कई रसूल

مِّنْ قَبْلِكَ	فَصَبَرُوْا	عَلٰى مَا	كُذِّبُوْا	وَاُوْذُوْا	حَتّٰٓى	اَتٰىهُمْ
आपसे पहले	पस उन्होंने सबर किया	उस पर जो	वो झुठलाए गए	और वो सताए गए	यहाँ तक कि	आ गई उन के पास

نَصْرُنَا ۚ	وَلَا	مُبَدِّلَ	لِكَلِمٰتِ	اللّٰهِ ۚ	وَلَقَدْ	جَآءَكَ	مِنْ نَّبَاِ
मदद हमारी	और नहीं	कोई बदलने वाला	कलिमात को	अल्लाह के	और अलबत्ता तहक़ीक़	आ गईं आप के पास	ख़बरें

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿34﴾	وَاِنْ	كَانَ	كَبُرَ	عَلَيْكَ	اِعْرَاضُهُمْ	فَاِنِ
रसूलों की	और अगर	है	भारी	आप पर	ऐराज़ करना उनका	फिर अगर

اسْتَطَعْتَ	اَنْ	تَبْتَغِيَ	نَفَقًا	فِي الْاَرْضِ	اَوْ	سُلَّمًا	فِي السَّمَآءِ
इस्तिताअत रखते हैं आप	कि	आप तलाश करें	एक सुरंग	ज़मीन में	या	एक सीढ़ी	आसमान में

فَتَاْتِيَهُمْ	بِاٰيَةٍ ؕ	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَجَمَعَهُمْ	عَلَى الْهُدٰى
तो आप ले आऐं उनके पास	कोई निशानी	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो जमा कर देता उन्हें	हिदायत पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَسْمَعُوْنَ ؕ	الَّذِيْنَ	يَسْتَجِيْبُ	اِنَّمَا	مِنَ الْجٰهِلِيْنَ (35)	تَكُوْنَنَّ	فَلَا
सुनते हैं	वो ही जो	क़ुबूल करते हैं	बेशक	नादानों में से	हरगिज़ आप हों	पस ना

لَوْلَا	وَقَالُوْا	يُرْجَعُوْنَ (36)	اِلَيْهِ	ثُمَّ	اللّٰهُ	يَبْعَثُهُمُ	وَالْمَوْتٰى
क्यों ना	और वो कहते हैं	वो लौटाए जाऐंगे	उसी की तरफ़	फिर	अल्लाह	उठाएगा उन्हें	और मुर्दे

اَنْ	عَلٰٓى	قَادِرٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	قُلْ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	اٰيَةٌ	عَلَيْهِ	نُزِّلَ
कि	उस पर	क़ादिर है	अल्लाह	बेशक	कह दीजिए	उसके रब की तरफ़ से	कोई निशानी	उस पर	नाज़िल की गई

مِنْ دَآبَّةٍ	وَمَا	لَا يَعْلَمُوْنَ (37)	اَكْثَرَهُمْ	وَّلٰكِنَّ	اٰيَةً	يُّنَزِّلَ
कोई जानदार	और नहीं	नहीं वो ईल्म रखते	अक्सर उनके	और लेकिन	कोई निशानी	वो नाज़िल करे

اَمْثَالُكُمْ ؕ	اُمَمٌ	اِلَّآ	بِجَنَاحَيْهِ	يَّطِيْرُ	طٰٓئِرٍ	وَلَا	فِى الْاَرْضِ
तुम्हारी ही तरह	गिरोह हैं	मगर	साथ अपने दो परों के	जो उड़ता हो	कोई परिन्दा	और ना	ज़मीन में

يُحْشَرُوْنَ (38)	اِلٰى رَبِّهِمْ	ثُمَّ	مِنْ شَىْءٍ	فِى الْكِتٰبِ	فَرَّطْنَا	مَا
वो इकट्ठे किए जाऐंगे	तरफ़ अपने रब के	फिर	किसी चीज़ की	किताब में	कमी की हमने	नहीं

يَّشَاِ	مَنْ	فِى الظُّلُمٰتِ ؕ	وَّبُكْمٌ	صُمٌّ	بِاٰيٰتِنَا	كَذَّبُوْا	وَالَّذِيْنَ
चाहता है	जिसको	अँधेरों में हैं	और गूँगे हैं	बहरे	हमारी आयात को	झुठलाया	और वो जिन्होंने

قُلْ	مُّسْتَقِيْمٍ (39)	عَلٰى صِرَاطٍ	يَجْعَلْهُ	يَّشَاْ	وَمَنْ	يُضْلِلْهُ ؕ	اللّٰهُ
कह दीजिए	सीधे के	ऊपर रास्ते	वो कर देता है उसे	वो चाहता है	और जिसको	भटका देता है उसे	अल्लाह

السَّاعَةُ	اَتَتْكُمُ	اَوْ	اللّٰهِ	عَذَابُ	اَتٰىكُمْ	اِنْ	اَرَءَيْتَكُمْ
घड़ी (क़यामत की)	आ जाए तुम्हारे पास	या	अल्लाह का	अज़ाब	आ जाए तुम्हारे पास	अगर	क्या ग़ौर किया तुमने

اِيَّاهُ	بَلْ	صٰدِقِيْنَ (40)	كُنْتُمْ	اِنْ	تَدْعُوْنَ ج	اللّٰهِ	اَغَيْرَ
सिर्फ़ उसी को	बल्कि	सच्चे	हो तुम	अगर	तुम पुकारोगे	अल्लाह को	क्या ग़ैर

النصف
وقف غفران

وقف منزل
عند البعض على يسمعون

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَدْعُونَ	فَيَكْشِفُ	مَا	تَدْعُونَ	إِلَيْهِ	إِنْ	شَآءَ	وَتَنْسَوْنَ
तुम पुकारोगे	फिर वो खोल देगा	उसे जो	तुम पुकारोगे	तरफ़ उसी के	अगर	वो चाहे	और तुम भूल जाओगे

ع 4 11 10

مَا	تُشْرِكُونَ ﴿41﴾ ع	وَلَقَدْ	أَرْسَلْنَآ	إِلَىٰٓ أُمَمٍ	مِّنْ قَبْلِكَ	فَأَخَذْنٰهُمْ
जिन्हें	तुम शरीक ठहराते हो	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	तरफ़ उम्मतों के	आपसे क़ब्ल	पस पकड़ लिया हमने उन्हें

بِالْبَأْسَآءِ	وَالضَّرَّآءِ	لَعَلَّهُمْ	يَتَضَرَّعُونَ ﴿42﴾	فَلَوْلَآ	إِذْ	جَآءَهُمْ
साथ तंगी	और तकलीफ़ के	शायद कि वो	वो आजिज़ी करें	फिर क्यों ना	जब	आया उनके पास

بَأْسُنَا	تَضَرَّعُوا	وَلٰكِنْ	قَسَتْ	قُلُوبُهُمْ	وَزَيَّنَ	لَهُمُ
अज़ाब हमारा	उन्होंने आजिज़ी की	और लेकिन	सख़्त हो गए	दिल उनके	और मुज़य्यन कर दिया	उनके लिए

الشَّيْطٰنُ	مَا	كَانُوا	يَعْمَلُونَ ﴿43﴾	فَلَمَّا	نَسُوا	مَا	ذُكِّرُوا
शैतान ने	जो	थे वो	वो अमल करते	फिर जब	वो भूल गए	जो कुछ	वो नसीहत किए गए थे

بِهٖ	فَتَحْنَا	عَلَيْهِمْ	أَبْوَابَ	كُلِّ	شَيْءٍ ط	حَتّٰىٓ	إِذَا
जिसकी	खोल दिए हमने	उन पर	दरवाज़े	हर	चीज़ के	यहाँ तक कि	जब

فَرِحُوا	بِمَآ	أُوتُوٓا	أَخَذْنٰهُمْ	بَغْتَةً	فَإِذَا	هُمْ	مُّبْلِسُونَ ﴿44﴾
वो खुश हो गए	उस पर जो	वो दिए गए थे	पकड़ लिया हमने उन्हें	अचानक	तो उस वक़्त	वो	मायूस होने वाले थे

فَقُطِعَ	دَابِرُ	الْقَوْمِ	الَّذِينَ	ظَلَمُوا ط	وَالْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ
पस काट दी गई	जड़	उस क़ौम की	जिन्होंने	ज़ुल्म किया	और सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है

الْعٰلَمِينَ ﴿45﴾	قُلْ	أَرَءَيْتُمْ	إِنْ	أَخَذَ	اللّٰهُ	سَمْعَكُمْ	وَأَبْصَارَكُمْ
तमाम जहानों का	कह दीजिए	क्या ग़ौर किया तुमने	अगर	ले जाए	अल्लाह	कान तुम्हारे	और आँखें तुम्हारी

وَخَتَمَ	عَلٰى قُلُوبِكُمْ	مَّنْ	إِلٰهٌ	غَيْرُ	اللّٰهِ	يَأْتِيكُمْ	بِهٖ ط
और वो मोहर लगा दे	तुम्हारे दिलों पर	कौन है	इलाह	सिवाय	अल्लाह के	जो लाए तुम्हारे पास	उसे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اُنْظُرْ	كَيْفَ	نُصَرِّفُ	الْاٰيٰتِ	ثُمَّ	هُمْ	يَصْدِفُوْنَ (46)	قُلْ
देखो	किस तरह	हम फेर-फेर कर लाते हैं	आयात को	फिर	वो	वो ऐराज़ करते हैं	कह दीजिए

اَرَءَيْتَكُمْ	اِنْ	اَتٰىكُمْ	عَذَابُ	اللّٰهِ	بَغْتَةً	اَوْ	جَهْرَةً	هَلْ
क्या ग़ौर किया तुमने	अगर	आए तुम्हारे पास	अज़ाब	अल्लाह का	अचानक	या	एलानिया	नहीं

يُهْلَكُ	اِلَّا	الْقَوْمُ	الظّٰلِمُوْنَ (47)	وَمَا	نُرْسِلُ	الْمُرْسَلِيْنَ
हलाक किए जाएंगे	मगर	वो लोग	जो ज़ालिम हैं	और नहीं	हम भेजते	रसूलों को

اِلَّا	مُبَشِّرِيْنَ	وَمُنْذِرِيْنَ ج	فَمَنْ	اٰمَنَ	وَاَصْلَحَ	فَلَا
मगर	ख़ुशख़बरी देने वाले	और डराने वाले (बना कर)	पस जो कोई	ईमान लाया	और उसने इस्लाह कर ली	तो ना

خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ (48)	وَالَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا
कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	और वो जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को

يَمَسُّهُمُ	الْعَذَابُ	بِمَا	كَانُوْا	يَفْسُقُوْنَ (49)	قُلْ	لَّآ اَقُوْلُ
छुऐगा उन्हें	अज़ाब	बवजह उसके जो	थे वो	वो नाफ़रमानी करते	कह दीजिए	नहीं मैं कहता

لَكُمْ	عِنْدِيْ	خَزَآئِنُ	اللّٰهِ	وَلَآ	اَعْلَمُ	الْغَيْبَ	وَلَآ	اَقُوْلُ
तुमसे	मेरे पास	ख़ज़ाने हैं	अल्लाह के	और नहीं	मैं जानता	ग़ैब को	और नहीं	मैं कहता

لَكُمْ	اِنِّيْ	مَلَكٌ ج	اِنْ	اَتَّبِعُ	اِلَّا	مَا	يُوْحٰٓى	اِلَيَّ ط	قُلْ
तुमसे	बेशक मैं	फ़रिश्ता हूँ	नहीं	मैं पैरवी करता	मगर	उसकी जो	वही की जाती है	तरफ़ मेरे	कह दीजिए

ع 5 9 11

هَلْ	يَسْتَوِي	الْاَعْمٰى	وَالْبَصِيْرُ ط	اَفَلَا	تَتَفَكَّرُوْنَ (50) ع	وَاَنْذِرْ
क्या	बराबर हो सकता है	अँधा	और देखने वाला	क्या फिर नहीं	तुम ग़ौरो-फ़िक्र करते	और डराइए

بِهِ	الَّذِيْنَ	يَخَافُوْنَ	اَنْ	يُّحْشَرُوْٓا	اِلٰى رَبِّهِمْ	لَيْسَ	لَهُمْ
साथ उसके	उनको जो	ख़ौफ़ खाते हैं	कि	वो इकट्ठे किए जाएंगे	तरफ़ अपने रब के	नहीं (होगा)	उनके लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ دُوْنِهٖ	وَلِيٌّ	وَّلَا	شَفِيْعٌ	لَّعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ (51)	وَلَا	تَطْرُدِ
उसके सिवा	कोई दोस्त	और ना	कोई सिफ़ारिशी	ताकि वो	वो बच जाएं	और ना	आप दूर कीजिए

الَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	رَبَّهُمْ	بِالْغَدٰوةِ	وَالْعَشِيِّ	يُرِيْدُوْنَ	وَجْهَهٗ ط
उनको जो	पुकारते हैं	अपने रब को	सुबह	और शाम	वो चाहते हैं	चेहरा उसका

مَا	عَلَيْكَ	مِنْ حِسَابِهِمْ	مِّنْ شَيْءٍ	وَّمَا	مِنْ حِسَابِكَ	عَلَيْهِمْ
नहीं	आप पर	उनके हिसाब में से	कोई चीज़	और नहीं	आपके हिसाब में से	उन पर

مِّنْ شَيْءٍ	فَتَطْرُدَهُمْ	فَتَكُوْنَ	مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (52)	وَكَذٰلِكَ
कोई चीज़	फिर (अगर) आप दूर करेंगे उन्हें	तो आप हो जाएंगे	ज़ालिमों में से	और इसी तरह

فَتَنَّا	بَعْضَهُمْ	بِبَعْضٍ	لِّيَقُوْلُوْٓا	اَهٰٓؤُلَآءِ	مَنَّ	اللّٰهُ	عَلَيْهِمْ
आज़माया हमने	उनके बाज़ को	साथ बाज़ के	ताकि वो कहें	क्या ये हैं वो लोग	एहसान किया	अल्लाह ने	जिन पर

مِّنْۢ بَيْنِنَا ط	اَلَيْسَ	اللّٰهُ	بِاَعْلَمَ	بِالشّٰكِرِيْنَ (53)	وَاِذَا	جَآءَكَ
हमारे दर्मियान में से	क्या नहीं है	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला	शुक्र करने वालों को	और जब	आएं आपके पास

الَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِاٰيٰتِنَا	فَقُلْ	سَلٰمٌ	عَلَيْكُمْ	كَتَبَ	رَبُّكُمْ
वो जो	ईमान लाते हैं	हमारी आयात पर	पस कह दीजिए	सलाम हो	तुम पर	लिख दी	तुम्हारे रब ने

عَلٰى نَفْسِهِ	الرَّحْمَةَ لا	اَنَّهٗ	مَنْ	عَمِلَ	مِنْكُمْ	سُوْٓءًا	بِجَهَالَةٍ
अपने नफ़्स पर	रहमत	कि बेशक वो	जो	अमल करे	तुम में से	बुरे	बवजह जहालत के

ثُمَّ	تَابَ	مِنْۢ بَعْدِهٖ	وَاَصْلَحَ	فَاَنَّهٗ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (54)
फिर	वो तौबा कर ले	बाद उसके	और वो इस्लाह कर ले	तो बेशक वो	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है

وَكَذٰلِكَ	نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	وَلِتَسْتَبِيْنَ	سَبِيْلُ	الْمُجْرِمِيْنَ (55) ع
और इसी तरह	हम खोल-खोल कर बयान करते हैं	आयात को	और ताकि वाज़ेह हो जाए	रास्ता	मुजरिमों का

ع 6 5 12

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قُلْ	اِنِّىْ	نُهِيْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ	الَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ
कह दीजिए	बेशक मैं	रोका गया हूँ मैं	कि	मैं इबादत करूँ	उनकी जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाय

اللّٰهِ ؕ	قُلْ	لَّاۤ اَتَّبِعُ	اَهْوَآءَكُمْ ۙ	قَدْ	ضَلَلْتُ	اِذًا	وَّمَاۤ
अल्लाह के	कह दीजिए	नहीं मैं पैरवी करूँगा	तुम्हारी ख़्वाहिशात की	तहक़ीक़	मैं भटक गया	तब	और नहीं (हूँगा)

اَنَا	مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿56﴾	قُلْ	اِنِّىْ	عَلٰى بَيِّنَةٍ	مِّنْ رَّبِّىْ
मैं	हिदायत पाने वालों में से	कह दीजिए	बेशक मैं	एक वाज़ेह दलील पर हूँ	अपने रब की तरफ़ से

وَكَذَّبْتُمْ	بِهٖ ؕ	مَا	عِنْدِىْ	مَا	تَسْتَعْجِلُوْنَ	بِهٖ ؕ	اِنِ
और झुठला दिया तुमने	उसे	नहीं	मेरे पास	वो जो	तुम जल्द तलब कर रहे हो	उसको	नहीं

الْحُكْمُ	اِلَّا	لِلّٰهِ ؕ	يَقُصُّ	الْحَقَّ	وَهُوَ	خَيْرُ	الْفٰصِلِيْنَ ﴿57﴾
हुक्म	मगर	अल्लाह ही का	वो बयान करता है	हक़ को	और वो	बेहतर है	सब फ़ैसला करने वालों से

قُلْ	لَّوْ	اَنَّ	عِنْدِىْ	مَا	تَسْتَعْجِلُوْنَ	بِهٖ	لَقُضِىَ
कह दीजिए	अगर	बेशक	मेरे पास (होता)	वो जो	तुम जल्द तलब कर रहे हो	उसे	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता

الْاَمْرُ	بَيْنِىْ	وَبَيْنَكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿58﴾	وَعِنْدَهٗ
मामले का	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	और अल्लाह	ख़ूब जानता है	ज़ालिमों को	और उसी के पास हैं

مَفَاتِحُ	الْغَيْبِ	لَا يَعْلَمُهَاۤ	اِلَّا	هُوَ ؕ	وَيَعْلَمُ	مَا	فِى الْبَرِّ
चाबियाँ	ग़ैब की	नहीं जानता उन्हें	मगर	वो ही	और वो जानता है	जो	ख़ुश्की में है

وَالْبَحْرِ ؕ	وَمَا	تَسْقُطُ	مِنْ وَّرَقَةٍ	اِلَّا	يَعْلَمُهَا	وَلَا	حَبَّةٍ
और समुन्दर में	और नहीं	गिरता	कोई पत्ता	मगर	वो जानता है उसे	और ना	कोई दाना

فِىْ ظُلُمٰتِ	الْاَرْضِ	وَلَا	رَطْبٍ	وَّلَا	يَابِسٍ	اِلَّا	فِىْ كِتٰبٍ
अँधेरों में	ज़मीन के	और ना	कोई तर	और ना	कोई ख़ुश्क	मगर	एक किताब में है

© AL- INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّبِيْنٍ (59)	وَهُوَ	الَّذِىْ	يَتَوَفّٰىكُمْ	بِالَّيْلِ	وَيَعْلَمُ	مَا	جَرَحْتُمْ
वाज़ेह	और वो ही है	जो	फ़ौत करता है तुम्हें	रात को	और वो जानता है	जो	कमाई करते हो तुम

بِالنَّهَارِ	ثُمَّ	يَبْعَثُكُمْ	فِيْهِ	لِيُقْضٰٓى	اَجَلٌ	مُّسَمًّى ج	ثُمَّ
दिन को	फिर	वो उठाता है तुम्हें	उसमें	ताकि पूरा किया जाए	वक़्त	मुक़र्रर	फिर

ع 7 5 13

اِلَيْهِ	مَرْجِعُكُمْ	ثُمَّ	يُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَعْمَلُوْنَ (60) ع	وَهُوَ
उसी की तरफ़	लौटना है तुम्हारा	फिर	वो बताएगा तुम्हें	जो	थे तुम	तुम अमल करते	और वो

الْقَاهِرُ	فَوْقَ	عِبَادِهٖ	وَيُرْسِلُ	عَلَيْكُمْ	حَفَظَةً ط	حَتّٰٓى	اِذَا
ग़ालिब है	ऊपर	अपने बन्दों के	और वो भेजता है	तुम पर	निगेहबान	यहाँ तक कि	जब

جَآءَ	اَحَدَكُمُ	الْمَوْتُ	تَوَفَّتْهُ	رُسُلُنَا	وَهُمْ	لَا يُفَرِّطُوْنَ (61)
आती है	तुम में से किसी एक को	मौत	फ़ौत करते हैं उसे	हमारे भेजे हुए	और वो	नहीं वो कमी-कोताही करते

ثُمَّ	رُدُّوْٓا	اِلَى اللّٰهِ	مَوْلٰىهُمُ	الْحَقِّ ط	اَلَا	لَهُ	الْحُكْمُ قف
फिर	वो लौटाए जाते हैं	तरफ़ अल्लाह के	जो मौला है उनका	हक़ीक़ी	ख़बरदार	उसी के लिए है	फ़ैसला

وَهُوَ	اَسْرَعُ	الْحٰسِبِيْنَ (62)	قُلْ	مَنْ	يُّنَجِّيْكُمْ	مِّنْ ظُلُمٰتِ
और वो	ज़्यादा जल्द है (हिसाब में)	सब हिसाब लेने वालों से	कह दीजिए	कौन	निजात देता है तुम्हें	अँधेरों से

الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ	تَدْعُوْنَهٗ	تَضَرُّعًا	وَّخُفْيَةً ج	لَئِنْ	اَنْجٰىنَا
ख़ुश्की	और समुन्दर के	तुम पुकारते हो उसे	गिड़-गिड़ा कर	और चुपके-चुपके	अलबत्ता अगर	उसने निजात दी हमें

مِنْ هٰذِهٖ	لَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (63)	قُلِ	اللّٰهُ	يُنَجِّيْكُمْ
इससे	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएँगे	शुक्र करने वालों में से	कह दीजिए	अल्लाह	वो निजात देता है तुम्हें

مِّنْهَا	وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ	ثُمَّ	اَنْتُمْ	تُشْرِكُوْنَ (64)	قُلْ	هُوَ
इससे	और हर मुसीबत से	फिर	तुम	तुम शरीक बनाते हो	कह दीजिए	वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْقَادِرُ	عَلٰٓى	اَنْ	يَّبْعَثَ	عَلَيْكُمْ	عَذَابًا	مِّنْ فَوْقِكُمْ	اَوْ
क़ादिर है	इस पर	कि	वो भेजे	तुम पर	अज़ाब	तुम्हारे ऊपर से	या

مِنْ تَحْتِ	اَرْجُلِكُمْ	اَوْ	يَلْبِسَكُمْ	شِيَعًا	وَّيُذِيْقَ	بَعْضَكُمْ
नीचे से	तुम्हारे पाँव के	या	वो लड़ा दे तुम्हें	गिरोहों में	और वो चखा दे	तुम्हारे बाज़ को

بَاْسَ	بَعْضٍ ؕ	اُنْظُرْ	كَيْفَ	نُصَرِّفُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّهُمْ
क़ुव्वत	बाज़ की	देखो	किस तरह	हम फेर-फेर कर बयान करत हैं	आयात	ताकि वो

يَفْقَهُوْنَ ﴿65﴾	وَكَذَّبَ	بِهٖ	قَوْمُكَ	وَهُوَ	الْحَقُّ ؕ	قُلْ	لَّسْتُ
वो समझें	और झुठला दिया	उसे	आपकी क़ौम ने	हालाँकि वो	हक़ है	कह दीजिए	नहीं हूँ मैं

عَلَيْكُمْ	بِوَكِيْلٍ ﴿66﴾ ؕ	لِكُلِّ	نَبَاٍ	مُّسْتَقَرٌّ ۙ	وَّسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ﴿67﴾
तुम पर	कोई ज़िम्मेदार	वास्ते हर	ख़बर के	एक वक़्त मुक़र्रर है	और अनक़रीब	तुम जान लोगे

وَاِذَا	رَاَيْتَ	الَّذِيْنَ	يَخُوْضُوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِنَا	فَاَعْرِضْ	عَنْهُمْ
और जब	देखें आप	उन लोगों को	जो मशग़ूल होते हैं	हमारी आयात में	तो ऐराज़ कीजिए	उनसे

حَتّٰى	يَخُوْضُوْا	فِيْ حَدِيْثٍ	غَيْرِهٖ ؕ	وَاِمَّا	يُنْسِيَنَّكَ	الشَّيْطٰنُ
यहाँ तक कि	वो मशग़ूल हो जाऐं	किसी बात में	सिवाय उसके	और अगर	भुला दे आपको	शैतान

فَلَا	تَقْعُدْ	بَعْدَ	الذِّكْرٰى	مَعَ الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿68﴾	وَمَا
तो ना	आप बैठिए	बाद	याद आने के	साथ उन लोगों के	जो ज़ालिम हैं	और नहीं

عَلَى الَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ	مِنْ حِسَابِهِمْ	مِّنْ شَيْءٍ	وَّلٰكِنْ	ذِكْرٰى
उनके ज़िम्मे	जो तक़वा करते हैं	उनके हिसाब में से	कोई चीज़	और लेकिन	याद दिहानी है

لَعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ ﴿69﴾	وَذَرِ	الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	دِيْنَهُمْ	لَعِبًا
ताकि वो	वो तक़वा करें	और छोड़ दीजिए	उनको जिन्होंने	बना लिया है	अपने दीन को	खेल

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّلَهْوًا	وَّغَرَّتْهُمُ	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا	وَذَكِّرْ	بِهٖٓ	اَنْ
और तमाशा	और धोखे में डाल दिया उन्हें	ज़िन्दगी ने	दुनिया की	और नसीहत कीजिए	साथ उसके	कि

تُبْسَلَ	نَفْسٌۢ	بِمَا	كَسَبَتْ ۖق	لَيْسَ	لَهَا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
(ना) हलाक किया जाए	कोई नफ़्स	बवजह उसके जो	उसने कमाई की	नहीं है	उसके लिए	सिवाय	अल्लाह के

وَلِيٌّ	وَّلَا	شَفِيْعٌ ۚ	وَاِنْ	تَعْدِلْ	كُلَّ	عَدْلٍ	لَّا يُؤْخَذْ
कोई दोस्त	और ना	कोई सिफ़ारशी	और अगर	वो बदला दे	हर तरह का	बदला	ना लिया जाएगा

مِنْهَا ؕ	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اُبْسِلُوْا	بِمَا	كَسَبُوْا ۚ	لَهُمْ	شَرَابٌ
उससे	यही लोग हैं	वो जो	हलाक कर दिए गए	बवजह उसके जो	उन्होंने कमाया	उनके लिए है	पीना

ع 8 10 14

مِّنْ حَمِيْمٍ	وَّعَذَابٌ	اَلِيْمٌۢ	بِمَا	كَانُوْا	يَكْفُرُوْنَ ﴿70﴾ ع	قُلْ
खौलते हुए पानी से	और अज़ाब	दर्दनाक	बवजह उसके जो	थे वो	वो कुफ़्र करते	कह दीजिए

اَنَدْعُوْا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	مَا	لَا يَنْفَعُنَا	وَلَا	يَضُرُّنَا
क्या हम पुकारें	सिवाय	अल्लाह के	उसको जो	नहीं वो नफ़ा दे सकता हमें	और ना ही	वो नुक़सान दे सकता है हमें

وَنُرَدُّ	عَلٰٓى اَعْقَابِنَا	بَعْدَ	اِذْ	هَدٰىنَا	اللّٰهُ	كَالَّذِى
और हम फेर दिए जाएंगे	अपनी एड़ियों पर	बाद उसके	जब	हिदायत दी हमें	अल्लाह ने	उस शख़्स की तरह

اسْتَهْوَتْهُ	الشَّيٰطِيْنُ	فِى الْاَرْضِ	حَيْرَانَ ۠ص	لَهٗٓ	اَصْحٰبٌ	يَّدْعُوْنَهٗٓ
बहका दिया उसे	शैतानों ने	ज़मीन में	हैरान करके	उसके	कुछ साथी हैं	वो पुकारते हैं उसे

اِلَى	الْهُدَى	ائْتِنَا ؕ	قُلْ	اِنَّ	هُدَى	اللّٰهِ	هُوَ	الْهُدٰى ؕ
तरफ़	हिदायत के	आ जाओ हमारे पास	कह दीजिए	बेशक	हिदायत	अल्लाह की	वही	(असल) हिदायत है

وَاُمِرْنَا	لِنُسْلِمَ	لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿71﴾ لا	وَاَنْ	اَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ
और हुक्म दिए गए हम	ताकि हम फ़रमाबरदार हो जाएं	रब्बुल आलमीन के लिए	और ये कि	क़ायम करो	नमाज़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِىْ	وَهُوَ	تُحْشَرُوْنَ (72)	اِلَيْهِ	الَّذِىْۤ	وَهُوَ	وَاتَّقُوْهُ ؕ
जिसने	और वही है	तुम इकट्ठे किए जाओगे	जिसकी तरफ़	वही है	और वो	और डरो उससे

الثلثة

فَيَكُوْنُ ؕ	كُنْ	يَقُوْلُ	وَيَوْمَ	بِالْحَقِّ ؕ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ
तो वो हो जाएगा	हो जा	वो कहेगा	और जिस दिन	साथ हक़ के	और ज़मीन को	आसमानों को	पैदा किया

فِى الصُّوْرِ ؕ	يُنْفَخُ	يَوْمَ	الْمُلْكُ	وَلَهُ	الْحَقُّ ؕ	قَوْلُهُ
सूर में	फूँका जाएगा	जिस दिन	बादशाहत	और उसी के लिए है	सच्ची है	उसकी बात ही

وَاِذْ	الْخَبِيْرُ (73)	الْحَكِيْمُ	وَهُوَ	وَالشَّهَادَةِ ؕ	الْغَيْبِ	عٰلِمُ
और जब	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	और वो	और हाज़िर का	ग़ैब का	जानने वाला है

اِنِّىْۤ	اٰلِهَةً ج	اَصْنَامًا	اَتَتَّخِذُ	اٰزَرَ	لِاَبِيْهِ	اِبْرٰهِيْمُ	قَالَ
बेशक मैं	इलाह	बुतों को	क्या तू बनाता है	आज़र को	अपने बाप	इब्राहीम ने	कहा

اِبْرٰهِيْمَ	نُرِىْۤ	وَكَذٰلِكَ	مُّبِيْنٍ (74)	فِىْ ضَلٰلٍ	وَقَوْمَكَ	اَرٰىكَ
इब्राहीम को	हम दिखाते थे	और इसी तरह	खुली	गुमराही में	और तेरी क़ौम को	मैं देखता हूँ तुझे

فَلَمَّا	مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ (75)	وَلِيَكُوْنَ	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	مَلَكُوْتَ
फिर जब	यक़ीन करने वालों में से	और ताकि वो हो जाए	और ज़मीन की	आसमानों की	बादशाहत

فَلَمَّاۤ	رَبِّىْ ج	هٰذَا	قَالَ	كَوْكَبًا ج	رَاٰ	الَّيْلُ	عَلَيْهِ	جَنَّ
फिर जब	मेरा रब है	ये	उसने कहा	एक सितारा	उसने देखा	रात	उस पर	छा गई

بَازِغًا	الْقَمَرَ	رَاٰ	فَلَمَّا	الْاٰفِلِيْنَ (76)	لَاۤ اُحِبُّ	قَالَ	اَفَلَ
चमकता हुआ	चाँद को	उसने देखा	फिर जब	छुपने वालो को	नहीं मैं पसंद करता	कहा	वो छुप गया

يَهْدِنِىْ	لَّمْ	لَئِنْ	قَالَ	اَفَلَ	فَلَمَّاۤ	رَبِّىْ ج	هٰذَا	قَالَ
हिदायत दी मुझे	ना	अलबत्ता अगर	उसने कहा	वो छुप गया	फिर जब	मेरा रब है	ये	उसने कहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَاَ	فَلَمَّا	الضَّآلِّيْنَ ﴿77﴾	مِنَ الْقَوْمِ	لَاَكُوْنَنَّ	رَبِّيْ
उसने देखा	फिर जब	जो गुमराह हैं	उन लोगों मे से	अलबत्ता मैं ज़रूर हो जाऊँगा	मेरे रब ने

اَفَلَتْ	فَلَمَّآ	اَكْبَرُ ج	هٰذَآ	رَبِّيْ	هٰذَا	قَالَ	بَازِغَةً	الشَّمْسَ
वो छुप गया	फिर जब	सबसे बड़ा है	ये	मेरा रब है	ये	उसने कहा	चमकता हुआ	सूरज को

اِنِّيْ	تُشْرِكُوْنَ ﴿78﴾	مِّمَّا	بَرِيْٓءٌ	اِنِّيْ	يٰقَوْمِ	قَالَ
बेशक मैं	तुम शरीक ठहराते हो	उससे जो	बरी-उज़- ज़िम्मा हूँ	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	उसने कहा

حَنِيْفًا	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	فَطَرَ	لِلَّذِيْ	وَجْهِيَ	وَجَّهْتُ
यकसू होकर	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	उसके लिए जिसने	अपने चेहरे का	रुख़ कर लिया मैं ने

اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ	قَالَ	قَوْمُهٗ ط	وَحَآجَّهٗ	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿79﴾ ج	اَنَا	وَّمَآ
क्या तुम झगड़ते हो मुझसे	उसने कहा	उसकी क़ौम से	और झगड़ा किया उससे	मुशरिकीन में से	मैं	और नहीं

تُشْرِكُوْنَ	مَا	اَخَافُ	وَلَآ	هَدٰىنِ ط	وَقَدْ	فِي اللّٰهِ
तुम शरीक ठहराते हो	जिनको	मैं डरता (उनसे)	और नहीं	उसने हिदायत दी मुझे	हालाँकि तहक़ीक़	अल्लाह के बारे में

كُلَّ	رَبِّيْ	وَسِعَ	شَيْئًا ط	رَبِّيْ	يَّشَآءَ	اَنْ	اِلَّآ	بِهٖٓ
हर	मेरे रब ने	अहाता कर रखा है	कोई चीज़	रब मेरा	चाहे	ये कि	मगर	साथ उसके

مَآ	اَخَافُ	وَكَيْفَ	تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿80﴾	اَفَلَا	عِلْمًا ط	شَيْءٍ
उससे जिसको	मैं डरूँ	और क्यों कर	तुम नसीहत पकड़ते	क्या भला नहीं	इल्म के ऐतबार से	चीज़ का

لَمْ	مَا	بِاللّٰهِ	اَشْرَكْتُمْ	اَنَّكُمْ	تَخَافُوْنَ	وَلَا	اَشْرَكْتُمْ
नहीं	उसे जो	अल्लाह का	शरीक बनाया तुमने	कि बेशक तुम	तुम डरते	जबकि नहीं	शरीक बनाया तुमने

اَحَقُّ	الْفَرِيْقَيْنِ	فَاَيُّ	سُلْطٰنًا ط	عَلَيْكُمْ	بِهٖ	يُنَزِّلْ
ज़्यादा हक़दार है	दोनों गिरोहों में से	तो कौन सा	कोई दलील	तुम पर	जिसकी	उसने नाज़िल की

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

بِالْاَمْنِ ج	اِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ (81)	اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَلَمْ	يَلْبِسُوْٓا
अमन का	अगर	हो तुम	तुम जानते	वो जो	ईमान लाए	और नहीं	उन्होंने मिलाया

ع 9 12 15

اِيْمَانَهُمْ	بِظُلْمٍ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمُ	الْاَمْنُ	وَهُمْ	مُّهْتَدُوْنَ (82) ع
अपने ईमान को	साथ ज़ुल्म के	यही लोग हैं	उनके लिए	अमन है	और वही	हिदायत याफ़्ता हैं

وَتِلْكَ	حُجَّتُنَآ	اٰتَيْنٰهَآ	اِبْرٰهِيْمَ	عَلٰى قَوْمِهٖ ط	نَرْفَعُ	دَرَجٰتٍ
और ये है	हुज्जत हमारी	दिया था हमने इसे	इब्राहीम को	उसकी क़ौम के ख़िलाफ़	हम बुलन्द करते हैं	दरजात

مَّنْ	نَّشَآءُ ط	اِنَّ	رَبَّكَ	حَكِيْمٌ	عَلِيْمٌ (83)	وَوَهَبْنَا	لَهٗٓ	اِسْحٰقَ
जिसके	हम चाहते हैं	बेशक	रब आपका	बहुत हिकमत वाला है	बहुत इल्म वाला है	और अता किए हमने	उसे	इसहाक़

وَيَعْقُوْبَ ط	كُلًّا	هَدَيْنَا ج	وَنُوْحًا	هَدَيْنَا	مِنْ قَبْلُ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ
और याक़ूब	हर एक को	हिदायत दी हमने	और नूह को	हिदायत दी हमने	इससे क़ब्ल	और उसकी औलाद में से

دَاوٗدَ	وَسُلَيْمٰنَ	وَاَيُّوْبَ	وَيُوْسُفَ	وَمُوْسٰى	وَهٰرُوْنَ ط	وَكَذٰلِكَ
दाऊद	और सुलैमान	और अय्यूब	और यूसुफ़	और मूसा	और हारून को	और इसी तरह

نَجْزِى	الْمُحْسِنِيْنَ (84) لا	وَزَكَرِيَّا	وَيَحْيٰى	وَعِيْسٰى	وَاِلْيَاسَ ط	كُلٌّ
हम बदला देते हैं	एहसान करने वालों को	और ज़करिया	और याहया	और ईसा	और इलयास	सब के सब

مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (85) لا	وَاِسْمٰعِيْلَ	وَالْيَسَعَ	وَيُوْنُسَ	وَلُوْطًا ط	وَكُلًّا
नेक लोगों में से थे	और इस्माईल	और अल यसअ	और यूनुस	और लूत	और हर एक को

فَضَّلْنَا	عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (86) لا	وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ	وَذُرِّيّٰتِهِمْ	وَاِخْوَانِهِمْ ج
फ़ज़ीलत दी हमने	तमाम जहान वालों पर	और उनके आबा ओ अजदाद में से	और उनकी औलाद में से	और उनके भाईयों में से

وَاجْتَبَيْنٰهُمْ	وَهَدَيْنٰهُمْ	اِلٰى صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (87)	ذٰلِكَ	هُدَى
और चुन लिया हमने उन्हें	और हिदायत दी हमने उन्हें	तरफ़ रास्ते	सीधे के	ये	हिदायत है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهِ	يَهْدِيْ	بِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ؕ	وَلَوْ	اَشْرَكُوْا
अल्लाह की	वो हिदायत देता है	साथ उसके	जिसे	वो चाहता है	अपने बन्दों में से	और अगर	वो शिर्क करते

لَحَبِطَ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿88﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ
अलबत्ता ज़ाया हो जाते	उनसे	जो	थे वो	वो अमल करते	यही लोग हैं	वो जो	दी हमने उन्हें

الْكِتٰبَ	وَالْحُكْمَ	وَالنُّبُوَّةَ ۚ	فَاِنْ	يَّكْفُرْ	بِهَا	هٰٓؤُلَآءِ	فَقَدْ
किताब	और हिकमत	और नबुव्वत	फिर अगर	कुफ़्र करते हैं	उसका	ये लोग	तो तहक़ीक़

وَكَّلْنَا	بِهَا	قَوْمًا	لَّيْسُوْا	بِهَا	بِكٰفِرِيْنَ ﴿89﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
मुक़र्रर कर दिया हमने	साथ उसके	एक क़ौम को	नहीं हैं वो	उसका	इन्कार करने वाले	यही वो लोग हैं	जिन्हें

هَدَى	اللّٰهُ	فَبِهُدٰىهُمُ	اقْتَدِهْ ؕ	قُلْ	لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
हिदायत दी	अल्लाह ने	पस उनकी हिदायत की	आप पैरवी कीजिए	कह दीजिए	नहीं मैं सवाल करता तुमसे	उस पर

10 ع 8 16

اَجْرًا ؕ	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	ذِكْرٰى	لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿90﴾ ع	وَمَا	قَدَرُوا
किसी अजर का	नहीं	वो	मगर	एक नसीहत	तमाम जहान वालों के लिए	और नहीं	उन्होंने क़द्र की

اللّٰهَ	حَقَّ	قَدْرِهٖٓ	اِذْ	قَالُوْا	مَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	عَلٰى بَشَرٍ
अल्लाह की	जिस तरह हक़ है	उसकी क़द्र करने का	जब	उन्होंने कहा	नहीं	नाज़िल की	अल्लाह ने	किसी इन्सान पर

مِّنْ شَيْءٍ ؕ	قُلْ	مَنْ	اَنْزَلَ	الْكِتٰبَ	الَّذِيْ	جَآءَ	بِهٖ
कोई चीज़	कह दीजिए	किसने	नाज़िल की	किताब	वो जो	लाए	उसे

مُوْسٰى	نُوْرًا	وَّهُدًى	لِّلنَّاسِ	تَجْعَلُوْنَهٗ	قَرَاطِيْسَ	تُبْدُوْنَهَا
मूसा	नूर	और हिदायत थी	लोगों के लिए	तुम बना देते हो उसे	वर्क़-वर्क़	तुम ज़ाहिर करते हो उसे

وَتُخْفُوْنَ	كَثِيْرًا ۚ	وَعُلِّمْتُمْ	مَّا	لَمْ	تَعْلَمُوْٓا	اَنْتُمْ	وَلَآ
और तुम छुपाते हो	बहुत सा	और सिखाए गए हो तुम	जो	नहीं	तुम जानते थे	तुम	और ना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَلْعَبُوْنَ (91)	فِیْ خَوْضِهِمْ	ذَرْهُمْ	ثُمَّ	اللّٰهُ ۙ	قُلِ	اٰبَآؤُكُمْ ؕ
वो खेलते फिरें	अपनी बहस में	छोड़ दीजिए उन्हें	फिर	अल्लाह ने (उतारा है)	कह दीजिए	आबा ओ अजदाद तुम्हारे

بَيْنَ يَدَيْهِ	الَّذِیْ	مُّصَدِّقُ	مُبٰرَكٌ	اَنْزَلْنٰهُ	كِتٰبٌ	وَهٰذَا
इससे पहले है	उसकी जो	तसदीक़ करने वाली	बरकत वाली	नाज़िल किया हमने उसे	किताब है	और ये

بِالْاٰخِرَةِ	يُؤْمِنُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	حَوْلَهَا ؕ	وَمَنْ	اُمَّ الْقُرٰى	وَلِتُنْذِرَ
आख़िरत पर	ईमान रखते हैं	और वो जो	उसके इर्द-गिर्द है	और जो	अहले मक्का को	और ताकि आप डराएं

اَظْلَمُ	وَمَنْ	يُحَافِظُوْنَ (92)	عَلٰى صَلَاتِهِمْ	وَهُمْ	بِهٖ	يُؤْمِنُوْنَ
बड़ा ज़ालिम है	और कौन	वो हिफ़ाज़त करते हैं	अपनी नमाज़ की	और वो	उस पर	वो ईमान लाते हैं

وَلَمْ	اِلَیَّ	اُوْحِیَ	قَالَ	اَوْ	كَذِبًا	عَلَى اللّٰهِ	افْتَرٰى	مِمَّنِ
हालाँकि नहीं	तरफ़ मेरे	वही की गई	वो कहे	या	झूठ	अल्लाह पर	गढ़ ले	उससे जो

مَآ	مِثْلَ	سَاُنْزِلُ	قَالَ	وَّمَنْ	شَیْءٌ	اِلَيْهِ	يُوْحَ
उसके जो	मानिन्द	ज़रूर मैं नाज़िल करूँगा	कहे	और जो	कोई चीज़	तरफ़ उसके	वही की गई

الْمَوْتِ	فِیْ غَمَرٰتِ	الظّٰلِمُوْنَ	اِذِ	تَرٰٓى	وَلَوْ	اللّٰهُ ؕ	اَنْزَلَ
मौत की	सख़्तियों में होंगे	ज़ालिम	जब	आप देखें	और काश	अल्लाह ने	नाज़िल किया

الْيَوْمَ	اَنْفُسَكُمْ ؕ	اَخْرِجُوْٓا	اَيْدِيْهِمْ ۚ	بَاسِطُوْٓا	وَالْمَلٰٓئِكَةُ
आज	जानें अपनी	निकालो	अपने हाथों को	फैलाए हुए होंगे	और फ़रिश्ते

عَلَى اللّٰهِ	تَقُوْلُوْنَ	كُنْتُمْ	بِمَا	الْهُوْنِ	عَذَابَ	تُجْزَوْنَ
अल्लाह पर	तुम कहते	थे तुम	बवजह उसके जो	रुसवाई का	अज़ाब	तुम बदला दिए जाओगे

جِئْتُمُوْنَا	وَلَقَدْ	تَسْتَكْبِرُوْنَ (93)	عَنْ اٰيٰتِهٖ	وَكُنْتُمْ	غَيْرَ الْحَقِّ
आ गए तुम हमारे पास	और अलबत्ता तहक़ीक़	तुम तकब्बुर करते	उसकी आयात से	और थे तुम	नाहक़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فُرَادٰى	كَمَا	خَلَقْنٰكُمْ	اَوَّلَ	مَرَّةٍ	وَّتَرَكْتُمْ	مَّا	خَوَّلْنٰكُمْ
अकेले-अकेले	जैसा कि	पैदा किया था हमने तुम्हें	पहली	बार	और छोड़ आए तुम	जो	दिया हमने तुम्हें

وَرَآءَ	ظُهُوْرِكُمْ ۚ	وَمَا	نَرٰى	مَعَكُمْ	شُفَعَآءَكُمُ	الَّذِيْنَ
पीछे	अपनी पुश्तों के	और नहीं	हम देखते	साथ तुम्हारे	तुम्हारे सिफ़ारशियों को	वो जो

زَعَمْتُمْ	اَنَّهُمْ	فِيْكُمْ	شُرَكٰٓؤُا ؕ	لَقَدْ	تَّقَطَّعَ	بَيْنَكُمْ	وَضَلَّ
गुमान किया था तुमने	कि बेशक वो	तुम में	शरीक हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	कट गया (ताल्लुक़)	तुम्हारे दर्मियान	और गुम हो गया

ع 11 4 17

عَنْكُمْ	مَّا	كُنْتُمْ	تَزْعُمُوْنَ ﴿94﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ	فَالِقُ	الْحَبِّ
तुमसे	वो जो	थे तुम	तुम गुमान किया करते	बेशक	अल्लाह	फाड़ने वाला है	दाने

وَالنَّوٰى ؕ	يُخْرِجُ	الْحَىَّ	مِنَ الْمَيِّتِ	وَمُخْرِجُ	الْمَيِّتِ	مِنَ الْحَىِّ ؕ
और गुठली को	वो निकालता है	ज़िन्दा को	मुर्दा से	और निकालने वाला है	मुर्दा को	ज़िन्दा से

ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	فَاَنّٰى	تُؤْفَكُوْنَ ﴿95﴾	فَالِقُ	الْاِصْبَاحِ ۚ	وَجَعَلَ	الَّيْلَ
ये है	अल्लाह	तो कहाँ से	तुम फेरे जाते हो	फाड़ने वाला है	सुबह का	और उसने बनाया	रात को

سَكَنًا	وَّالشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ	حُسْبَانًا ؕ	ذٰلِكَ	تَقْدِيْرُ	الْعَزِيْزِ
बाइसे सुकून	और सूरज	और चाँद को	हिसाब का ज़रिया	ये	अंदाज़ा है	बहुत ज़बरदस्त का

الْعَلِيْمِ ﴿96﴾	وَهُوَ	الَّذِىْ	جَعَلَ	لَكُمُ	النُّجُوْمَ	لِتَهْتَدُوْا	بِهَا
बहुत इल्म वाले का	और वो ही है	जिसने	बनाए	तुम्हारे लिए	सितारे	ताकि तुम राह पाओ	उनके ज़रीए

فِىْ ظُلُمٰتِ	الْبَرِّ	وَالْبَحْرِ ؕ	قَدْ	فَصَّلْنَا	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ
तारीकियों में	खुश्की की	और समुन्दर की	तहक़ीक़	खोल कर बयान कर दीं हमने	आयात	उन लोगों के लिए

يَّعْلَمُوْنَ ﴿97﴾	وَهُوَ	الَّذِىْٓ	اَنْشَاَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ	فَمُسْتَقَرٌّ
जो इल्म रखते हैं	और वही है	जिसने	पैदा किया तुम्हें	एक जान से	फिर एक रहने की जगह

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّ مُسْتَوْدَعٌ ؕ	قَدْ	فَصَّلْنَا	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ	يَّفْقَهُوْنَ ﴿98﴾
और एक सुपुर्द किए जाने की जगह है	तहक़ीक़	खोल कर बयान कर दीं हमने	आयात	उन लोगों के लिए	जो समझते हैं

وَهُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْزَلَ	مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً ۚ	فَاَخْرَجْنَا	بِهٖ	نَبَاتَ
और वो ही है	जिसने	उतारा	आसमान से	पानी	फिर निकाली हमने	साथ उसके	पैदावार

كُلِّ	شَيْءٍ	فَاَخْرَجْنَا	مِنْهُ	خَضِرًا	نُّخْرِجُ	مِنْهُ	حَبًّا
हर	चीज़ की	फिर निकाला हमने	उससे	सब्ज़ा	हम निकालते हैं	उससे	दाने

مُّتَرَاكِبًا ۚ	وَمِنَ النَّخْلِ	مِنْ طَلْعِهَا	قِنْوَانٌ	دَانِيَةٌ	وَّ جَنّٰتٍ
तय-ब-तय	और खजूरों से	उनके शगूफ़ों से	ख़ोशे	झुके हुए	और बाग़ात

مِّنْ اَعْنَابٍ	وَّ الزَّيْتُوْنَ	وَالرُّمَّانَ	مُشْتَبِهًا	وَّ غَيْرَ	مُتَشَابِهٍ ؕ
अंगूरो के	और ज़ैतून	और अनार	मिलते-जुलते	और नहीं भी	मिलते-जुलते

اُنْظُرُوْٓا	اِلٰى	ثَمَرِهٖٓ	اِذَآ	اَثْمَرَ	وَ يَنْعِهٖ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكُمْ
देखो	तरफ़	उसके फल के	जब	वो फल लाए	और उसके पकने के	बेशक	उसमें

لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿99﴾	وَ جَعَلُوْا	لِلّٰهِ	شُرَكَآءَ	الْجِنَّ
अलबत्ता निशानियाँ हैं	उन लोगों के लिए	जो ईमान रखते हों	और उन्होंने बना लिया	अल्लाह के लिए	शरीक	जिन्नों को

وَخَلَقَهُمْ	وَ خَرَقُوْا	لَهٗ	بَنِيْنَ	وَ بَنٰتٍ	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ؕ
हालाँकि उसने पैदा किया उन्हें	और उन्होंने गढ़ लिए	उसके लिए	बेटे	और बेटियाँ	बग़ैर	इल्म के

سُبْحٰنَهٗ	وَ تَعٰلٰى	عَمَّا	يَصِفُوْنَ ﴿100﴾ ع	بَدِيْعُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ
पाक है वो	और बुलन्दतर है	उससे जो	वो वस्फ़ बयान करते हैं	मोजिद है	आसमानों	और ज़मीन का

ع 12 6 18

اَنّٰى	يَكُوْنُ	لَهٗ	وَلَدٌ	وَّ لَمْ	تَكُنْ	لَّهٗ	صَاحِبَةٌ ؕ
क्यों कर	हो सकती है	उसकी	कोई औलाद	हालाँकि नहीं	है	उसकी	कोई बीवी

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَخَلَقَ	كُلَّ	شَيْءٍ ج	وَهُوَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ (101)	ذٰلِكُمُ
और उसने पैदा किया	हर	चीज़ को	और वो	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	ये है

اللّٰهُ	رَبُّكُمْ ج	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ج	خَالِقُ	كُلِّ	شَيْءٍ
अल्लाह	रब तुम्हारा	नहीं	कोई इलाह (बर हक़)	मगर	वो ही	पैदा करने वाला है	हर	चीज़ का

فَاعْبُدُوْهُ ج	وَهُوَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	وَّكِيْلٌ (102)	لَا تُدْرِكُهُ	الْاَبْصَارُ ز
पस इबादत करो उसी की	और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	कारसाज़ है	नहीं पा सकतीं उसे	निगाहें

وَهُوَ	يُدْرِكُ	الْاَبْصَارَ ج	وَهُوَ	اللَّطِيْفُ	الْخَبِيْرُ (103)	قَدْ	جَآءَكُمْ
और वो	वो पा लेता है	निगाहों को	और वो	बहुत बारीक बीन है	ख़ूब बाख़बर है	तहक़ीक़	आ गईं तुम्हारे पास

بَصَآئِرُ	مِنْ رَّبِّكُمْ ج	فَمَنْ	اَبْصَرَ	فَلِنَفْسِهٖ ج	وَمَنْ	عَمِيَ
खुली दलीलें	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तो जिसने	देख लिया	तो उसके अपने लिए है	और जो	अंधा हुआ

فَعَلَيْهَا ط	وَمَآ	اَنَا	عَلَيْكُمْ	بِحَفِيْظٍ (104)	وَكَذٰلِكَ	نُصَرِّفُ
तो उसी पर है	और नहीं	मैं	तुम पर	कोई निगरान	और इसी तरह	हम फेर-फेर कर लाते हैं

الْاٰيٰتِ	وَلِيَقُوْلُوْا	دَرَسْتَ	وَلِنُبَيِّنَهٗ	لِقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ (105)
आयात को	और ताकि वो कहें	पढ़ लिया है तूने	और ताकि हम बयान करें उसे	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं

اِتَّبِعْ	مَآ	اُوْحِيَ	اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ ج	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا
पैरवी कीजिए	उसकी जो	वही किया गया	तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

هُوَ ج	وَاَعْرِضْ	عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ (106)	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	مَآ	اَشْرَكُوْا ط
वही	और ऐराज़ कीजिए	मुशरिकीन से	और अगर	चाहता	अल्लाह	ना	वो शिर्क करते

وَمَا	جَعَلْنٰكَ	عَلَيْهِمْ	حَفِيْظًا ج	وَمَآ	اَنْتَ	عَلَيْهِمْ	بِوَكِيْلٍ (107)
और नहीं	बनाया हमने आपको	उन पर	मुहाफ़िज़	और नहीं	आप	उन पर	कोई कारसाज़

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	تَسُبُّوا	الَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	فَيَسُبُّوا	اللّٰهَ
और ना	तुम गाली दो	उनको जिन्हें	वो पुकारते हैं	सिवाय	अल्लाह के	तो वो गाली देंगे	अल्लाह को

عَدْوًا	بِغَيْرِ	عِلْمٍ ط	كَذٰلِكَ	زَيَّنَّا	لِكُلِّ	اُمَّةٍ	عَمَلَهُمْ ص
ज़्यादती करके	बग़ैर	इल्म के	इसी तरह	मुज़य्यन कर दिए हमने	वास्ते हर	उम्मत के	अमल उनके

ثُمَّ	اِلٰى رَبِّهِمْ	مَّرْجِعُهُمْ	فَيُنَبِّئُهُمْ	بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (108)
फिर	तरफ़ अपने रब के	लौटना है उनका	फिर वो बता देगा उन्हें	वो जो	थे वो	वो अमल करते

وَاَقْسَمُوْا	بِاللّٰهِ	جَهْدَ	اَيْمَانِهِمْ	لَئِنْ	جَآءَتْهُمْ	اٰيَةٌ
और उन्होंने क़समें खाईं	अल्लाह की	पक्की	क़समें अपनी	अलबत्ता अगर	आई उनके पास	कोई निशानी

لَّيُؤْمِنُنَّ	بِهَا ط	قُلْ	اِنَّمَا	الْاٰيٰتُ	عِنْدَ اللّٰهِ	وَمَا
अलबत्ता वो ज़रूर इमान लाऐंगे	उस पर	कह दीजिए	बेशक	निशानियाँ	पास हैं अल्लाह के	और क्या चीज़

يُشْعِرُكُمْ لا	اَنَّهَآ	اِذَا	جَآءَتْ	لَا يُؤْمِنُوْنَ (109)	وَنُقَلِّبُ
आगाह करे तुम्हें	कि बेशक वो	जब	वो आ जाऐंगी	नहीं वो ईमान लाऐंगे	और हम फेर देंगे

اَفْئِدَتَهُمْ	وَاَبْصَارَهُمْ	كَمَا	لَمْ	يُؤْمِنُوْا	بِهٖٓ	اَوَّلَ
उनके दिलों को	और उनकी निगाहों को	जैसा कि	नहीं	वो ईमान लाए	उस पर	पहली

مَرَّةٍ	وَّنَذَرُهُمْ	فِيْ طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ (110) ع
बार	और हम छोड़ देंगे उन्हें	उनकी सरकशी में	वो भटकते फिरेंगे

ع 13 / 10 / 19

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION